ISSN 2277-7660

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका

अमर ज्योति

आसोज मेले की हार्दिक शुभकामनाएँ!

ओ निज तीरथ तालवो,
जोति सही नित श्याम की।
देव बराबर कोई नहीं,
महिमा घणी मुकाम की।।

वर्ष: 70 अक्टूबर, 2019 अंक: 8

प्रकाशक :
बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक
डॉ. मनबीर

सह संपादक
श्रीमती अनिला बिश्नोई

कार्यालय पता :
'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर
हिसार - 125 001 (हरियाणा)
दूरभाष : 80590-27929
94670-90729
email: editor@amarjyotipatrika.com,
Website : www.amarjyotipatrika.com
सभा कार्यालय दूरभाष :
फोन : 01662-225804

इस पत्रिका में उल्लेखित सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

सदस्यता शुल्क :
वार्षिक : ₹ 100
25 वर्ष : ₹ 1000

"अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें"

'अमर ज्योति' का ज्ञान दीप अपने घर आँगन में जलाइये।

विषय अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सबद-87	3
चिड़ियाएँ गुम हो रही हैं	4
सम्पादकीय	5
साखी	6
अब करणों है त्याग	7
द्विकाल संध्या करो	8
गुरु जाम्भोजी ने कहा- मैं ब्रह्म हूँ और मैं वही हूँ	10
खेजड़ली शहीदों को शत् शत् नमन्	13
कृष्ण के दृष्टिकोण-आज के सामाजिक सन्दर्भ में	14
पेड़ का दर्द, वे परमात्मा मेरे	16
गुरु जाम्भोजी का अवतार, याद बड़ा आएगा	17
Teachings of Guru Jambheshwar Ji in the context of Global Warming	18
बिश्नोई कौन ?	20
जीव रक्षा: गुरु जाम्भोजी और महात्मा गांधी के परिप्रेक्ष्य में	21
हरजस	24
बधाई सन्देश	25
बड़ा ही विलक्षण है बिश्नोई समाज	26
किसन पच्चीसी, चौमासे आयो रे ऊपरे बादल छायो रे	27
बिश्नोई पंथ एवं पर्यावरण संचेतना	28
पर्यावरण सुरक्षा: हमारा कर्त्तव्य और दायित्व	31
सामाजिक हलचल : जन्माष्टमी महोत्सव	32-42

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

सबद-87

दोहा

लूणकरण बीकानेरीयो, ढ़ोसी ने हुवो तैयार।
खट् दर्शन में बूझियो, जीत कही तिण बार।
राव कटक सब साज के, काणवै पहुता आय।
कर्मसी मुंहतो यों कहै, वरजो मति जम्भराय।
जावै नितो गुण घणा, सतगुरु कही विचार।
रावल मालो मेल्हियो, बूझण लागो सार।
देव कहै जीतो नहीं, लड़ियो सन्मुख होय।
शब्द सुणायो देवजी, दुबध्या देवो खोय।

इस प्रसंग के पूर्व भी यही प्रसंग सबद संख्या 64-65 में आया है। वहाँ पर लूणकरण का नारनौल युद्ध में जाने का वर्णन आया है। उस समय श्री देवजी ने कुंवर जेतसी को सांत्वना देते हुऐ उपर्युक्त सबद सुनाये थे। प्राचीन हस्तलिखित साहित्य में यह सबद भी वही सबद 64-65 के पास ही है। इस प्रसंग को वहीं पर देखना चाहिये। यहाँ पर तो यह सबद किसी कारण वश से प्रचलित हो गया, जो पाठ की दृष्टि से रखा जा रहा है। इसकी विशेष कथा पूर्ण रूपेण जाम्भा पुराण में पढ़ें। यह सबद उस समय लूणकरण के विशेष दूत मालसिंह के प्रति सुनाया था जो विशेष रूप से साधना से सम्बन्ध रखता है।

सबद-87

जिहिं का उमग्या समाघूं, तिहिं पन्थ के बिरला लागूं।

भावार्थ-युद्ध दो तरह से किया जाता है प्रथम तो अन्याय का विरोध करने के लिये, दूसरा स्वार्थ पूर्ति के लिये किसी को कष्ट पहुँचा कर उसका धन हरण कर लेना। श्रेष्ठ युद्ध तो वही होता है जिसमें युद्ध करने की उमंग होती है। उसे आनन्द आता है, उसमें तो वह निश्चित ही विजय को प्राप्त करता है। उस उत्तम मार्ग में तो कोई विरला ही सच्चा क्षत्रिय चलता है। ऐसा

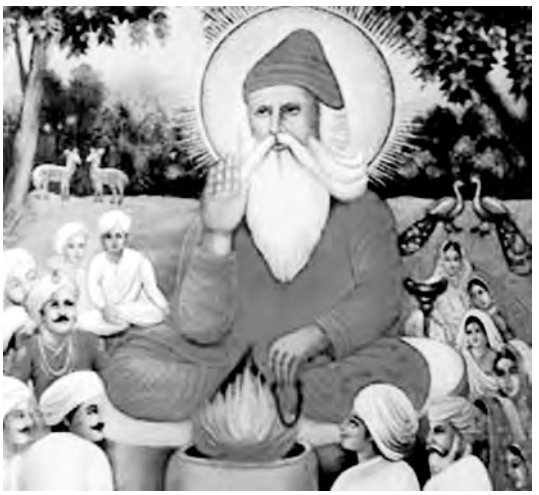

अन्याय विरोधी युद्ध करना तो अच्छा है किन्तु तुम्हारा लूणकरण द्वारा किये जाने वाला युद्ध ऐसा उत्तम नहीं है, यह तो दूसरी श्रेणी में आता है इसलिये विजय संभव नहीं है क्योंकि-

बीजा चाकर बीरूं, रिण शंख धीरूं,
कबही झूझत रायूं, पासै भाजत भायूं।

यहाँ पर इस युद्ध भूमि में स्वार्थ होने से इनके सैनिकों को उत्साह उमंग नहीं है। वे बेचारे जबरदस्ती से ले जाये जा रहे है। ये तो नौकर है, इनको तो उकसाने पर रण भूमि में युद्ध का शंख तो धैर्य पूर्वक बजा देंगे तथा थोड़ी देर तक लड़ेंगे भी, किन्तु बाद में युद्ध मैदान छोड़कर भाग जायेंगे।

ते हतते जीयौ, ताथै नुगरा झूझ न कीयो।
ते पूज्य कलि थानूं, सेई बसै शैतानूं।

क्योंकि इन लोगों ने वीरों के सामने आकर युद्ध नहीं किया है किन्तु निरीह जीवों को मारकर उनको भोजन बनाया है। इसलिये हे नुगरे लोगों! तुम लोग युद्ध नहीं कर सकते तथा इन लोगों ने कलयुग में थान-मूर्ति बनाकर भूत प्रेतों की सेवा की है। इसलिये इनके अन्दर शैतान बसता है, उस शैतान की वजह से

सत्य-असत्य, न्याय-अन्याय का विवेक इनको नहीं है। यह तो इस सबद का अर्थ युद्ध पक्ष में था। अब आगे अध्यात्म पक्ष में भी सबद क्या कहता है विचार करें-

जब कोई नया साधक आत्म साक्षात्कार करने के लिये साधना प्रारम्भ करता है तो उसे कुछ भी उमंग-आनन्द नहीं मिल पाता है। किन्तु जब धीरे-धीरे साधना में परिपक्व होता है तो उसे आनन्द की लहरों से परिचय हो जाता है। किन्तु वहाँ तक तो कोई विरला ही पहुँचता है क्योंकि उस आनन्द के समुद्र की लहरों में जब साधक मग्न हो जाता है तो उसकी सांसारिक वासनाएं स्वत: समाप्त हो जाती है। वह क्षणिक सुख रूपी छिलरिये में कभी भी समुद्र रूपी महानन्द को छोड़कर आना नहीं चाहेगा।

यह स्थिति श्री देवजी कहते हैं कि किसी विरले ही योद्धा योगी को मिलती है और तो बेचारे घर-बार छोड़कर पहले तो शंख बजा देते हैं कि हम इन्हीं मन तथा इन्द्रियों से युद्ध करेंगे। इस घोषणा के पश्चात् भी वे लोग कुछ समय तक तो युद्ध करते भी हैं और पीछे मैदान छोड़कर भाग जाते हैं, वापिस मोह-माया पाखण्ड में फंस जाते हैं। जीवों को मन, वचन, कर्म से मारते हैं तथा देवली थान बना कर पूजते हैं और दूसरों से पूजवाते हैं। ऐसे नुगरे लोग युद्ध नहीं कर सकते। साधना में सफल नहीं हो सकते। क्योंकि कुछ लोग तो यह साधना भी स्वार्थ पूर्ति के लिये करते हैं। उन्हें सांसारिक धन-दौलत तो भले ही मिल जाये परन्तु परमानन्द की प्राप्ति कहाँ?

- साभार 'जंभसागर'

चिड़ियाएँ गुम हो रही हैं

चिड़ियाएँ गुम हो रही हैं
या हमने उनके लिए
पेड़ और आंगन नहीं छोड़े?
चिड़ियाएँ गुम हो रही हैं
या हमने उनके हिस्से का दाना
अपने कनस्तरों में भर लिया?
चिड़ियाएँ गुम हो रही हैं
या हमने उन तक पहुँचने न दिया
धूप और पानी को?
चिड़ियाएँ गुम हो रही हैं
या उनके घोंसलों के लिए
हमने तिनकों को रौंद दिया है?
चिड़ियाएँ गुम हो रही हैं
या उन्हें खदेड़ दिया है
हमने अपनी बस्तियों से?
जरा तय करना बाकी है
चिड़ियाओं की गुमशुदगी की वजहें।
मैं चिड़ियाओं के पक्ष में खड़ा हूँ
दाना, पानी और तिनके लेकर,
मेरे घर आती हैं चिड़ियाएँ
क्योंकि हर महीने के राशन की
लिस्ट में उनका दाना भी लिखा होता है,
मेरे चावल और दाल के पहले।
एक कटोरी में रोज भरता हूँ पानी,
उनकी प्यास को अपना जानकार
पानी पीने से पहले।
एक खोका टांग दिया है,
जिसमें वो इकट्ठा करती हैं
तिनके घोंसले के लिए।
अब तक आठ बार हुए
उनके प्यारे बच्चे।
मुझे खुशी है कि
चिड़ियाएँ आती हैं मेरे घर
चहचहाती हैं दिनभर,
हम एक-दूसरे को
बहुत करीब से जानते हैं!!!

-डॉ. मोहसिन खान
मो.: 9860657970
E-mail: khanhind01@gmail.com

संपादकीय

आस्था व संस्कृति के प्रसारक 'जांभाणी मेले'

जब किसी एक स्थान पर बहुत से लोग धार्मिक, सामाजिक व अन्य लौकिक कारणों के लिए एकत्रित होते हैं या मिलते हैं तो इस मिलन को मेला कहते हैं। पुरातन समय से ही विभिन्न विचारों, धारणाओं तथा संस्कृतियों के आदान-प्रदान के लिए मेले प्रभावी माध्यम साबित हुए हैं। इसी उद्देश्य व भावना को शिरोधार्य कर गुरु जंभेश्वर जी महाराज के देवलोक गमन के पश्चात तालवा मुकाम में फाल्गुनी मेला प्रारंभ किया गया था। कुछ साल के उपरांत वील्होजी ने जब महसूस किया कि फाल्गुनी मेला साल में एक बार आयोजित होता है तथा एक साल का अंतराल कई तरह की सामाजिक व धार्मिक प्रक्रियाओं के समुचित संचालन में बाधित होता है तो उन्होंने आसोज मेला की शुरूआत की। जांभाणी साहित्य के अनुसार जांभोलाव मेले भी वील्होजी ने ही प्रारंभ करवाए थे। धीरे-धीरे जांभाणी मेलों की इस कड़ी में खेजड़ली मेला, धर्म स्थापना दिवस, जन्माष्टमी उत्सव, निर्वाण दिवस आदि भी शामिल होते चले गए।

स्पष्टतः मुकाम मेले बिश्नोइयों के लिए गुरु जांभोजी के चरणों में श्रद्धासुमन अर्पित करने के अवसर तो है ही, वहीं पारस्परिक मेल-जोल, धार्मिक व सामाजिक भावना के विकास का जरिया भी बनते हैं। चूंकि इन मेलों के प्रारंभ के पीछे की मूल भावना यही रही थी कि इस दौरान समाज के लोग सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक विषयों पर मिल बैठ कर सार्थक विचार-विमर्श तथा गहन चिंतन करें। जांभाणी साहित्य, शिक्षाओं व संस्कृति के प्रचार-प्रसार में भी इनकी प्रासंगिकता सदैव बनी रही है। वस्तुतः इन मेलों के माध्यम से इतर समाज के लोगों को भी जांभाणी संस्कृति व विचारधारा को जानने व समझने का अवसर प्राप्त होता रहा है।

लेकिन पिछले कुछ वर्षों से इसके मूल स्वरूप में विकार आने लगा है। समय के साथ मेलों में पहुंचने वालों की संख्या में तो इजाफा हुआ है मगर आस्था, श्रद्धा, सामाजिक उत्थान व विकास की बातें कहीं पीछे छूटती नजर आ रही हैं। क्योंकि अक्सर देखा गया है कि धार्मिक व सामाजिक चर्चा के लिए आयोजित होने वाले सम्मेलन, रात्रि के समय जागरण तथा हवन आदि विभिन्न कार्यक्रमों में सक्रियता गौण सी हो गई है। महज दिखावे तथा औपचारिकतावश ही लोग इन कार्यक्रमों में शिरकत कर रहे हैं। ज्यादातर समय इधर-उधर की बातों तथा व्यर्थ घूमने में ही खर्च कर देते हैं। फलतः मेले में पहुंचने वालों में अधिकांश ने आस्था व संस्कृति के प्रसारक रूपी इस अवसर को घूमने, मौज-मस्ती व पर्यटन का माध्यम बना लिया है। यही नहीं इस दौरान विभिन्न धार्मिक गतिविधियों जैसे हवन में आहुति देते समय, निज मंदिर में धोक लगाते समय तथा भंडारे में प्रसाद ग्रहण के वक्त जो आलम बनता है उससे अव्यवस्था तो बनती ही है, समाज के चरित्र को भी नुकसान पहुंचता है।

निःसंदेह इस तरह की मनोवृति से मेला आयोजन की मूल भावना को चोट पहुंचती है। वैसे भी जांभाणी संस्कृति तथा विचारधारा पहले ही उचित प्रचार-प्रसार के अभाव में एक सीमित दायरे में है। अगर इस तरह के आयोजन भी मूल उद्देश्य से भटक गए तो इससे उत्पन्न होने वाली स्थिति का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। ऐसे में यह नितांत आवश्यक है कि इन मेलों की उपयोगिता और प्रासंगिकता बनाए रखने के लिए प्रत्येक बिश्नोईजन को आगे आकर इनकी सफलता में सक्रिय भागेदारी करनी होगी। साथ ही यह संकल्प भी लेना होगा कि एक श्रेष्ठ एवं संस्कारित बिश्नोई होने के नाते इन मेलों के व्यवस्थित आयोजन तथा महत्ता में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं आने देंगे। आसोज मेले की सभी बिश्नोई बंधुओं को अमर-ज्योति परिवार की ओर से बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

सुरजनजी कृत साखी छन्दा की

सतगुरु वाचा क्यूं सरै, क्यूं धरा हुई उमेद।
सुकरत की पति कारणौ, पाठ चल्यो रूगवेद।
एक पाठ चल्यो रूगवेद, आण पूजा पर हरि।
तिहूं लोक मां अलोप मूरती, अलख न लख्यो जग हरि।
सीव बाच साची राखै, सतगुरु नरसिंघ दाणूं हरे।
कोड़ी पांच सूं प्रहलाद सीधो, सतयुग वाचा यूं सरै।1।
जुग तेता मोमणो क्रोड़ी क्यूं तरै, वेद यजुरवण करो।
साध सेवक के कारणौ, आप लियो अवतारो।
एक आप हरि अवतार लियो, सार कारण मोमणा।
परमोध उतर खण्ड ल्यायो, दैत संग यह अति घणां।
परसराम सहसाबाहूं मार्‌यो, टेक राखी सत पगे।
रोहितास हरिचन्द धन्य तारा, कोड़ी सात तरी तेतायुगे।2।
जुग दवापुर कोड़ी क्यूं तिरै, सुलै सोखे सरीर।
साध सेवक के कारणौ, कसणी सह शरीर।
एक हरिजन सह कसणी, घर जुग जुग सारिखो।
तिण बार सतगुरु आय पहुंतो, खरा खोटा पारिखो।
बुध काफिर संघारे, धरम जुग जुग संचरै।
पांच पांडु धिन कूंता, नव क्रोड़ी जुग द्वापर तिरै।3।
कलियुग बारां कारणौ, आयो गुरु आप अलेख।
सुरजन सोई सिंवरिये, जिण धार्‌यो भगवों भेख।
एक धार भगवें भेख आयो, सुगुरु वाणी सांभले।
सबदां सूं परीत सांची, जोति प्रगट निज थले।
अकलि अलेख आदि मूरति, वाचा जुग जुग सांचरै।
अनंत करोड़ी अलेख तारण, कलियुग आयो बारां कारणै।4।

भावार्थ– सत्ययुग में वचन पूर्ण कैसे हुआ। धरती का भार हल्का होगा यह आशा कैसे हुई? सुकृत करने हेतु ऋग्वेद का पाठ प्रारम्भ हुआ। उस समय केवल ऋग्वेद का ही पाठ होता था। उससे ही ईश्वर पूजा का विधान हुआ। अनेक देवी–देवताओं की पूजा प्रचलित नहीं थी। तीनों लोकों में भगवान अलख निरंजन प्रगट थे। भगवान अपनी बनायी हुई मर्यादा को तोड़ने नहीं देते, किन्तु रक्षा करते हैं। मर्यादा तोड़ने वाले हिरण्यकश्यप को भगवान ने नृसिंह रूप धारण करके मार दिया था। पांच करोड़

प्रह्लाद के साथ पार उतर गये इस प्रकार से अपने वचनों को पूर्ण करते हैं।1।

त्रेता युग में सात करोड़ भक्त पार कैसे उतर गये? उस समय यजुर्वेद का पाठ होता था। अपने साधु सेवकों के लिये भगवान ने अवतार धारण किया था। आप हरि ने अवतार लेकर सार वस्तु का संग्रह किया। उत्तराखण्ड में दैत्य बहुत ही ज्यादा बढ़ चुके थे इसलिये यहां पर आना हुआ। परशुराम अवतार धारण करके सहस्रबाहु को मारा था। संतों की लज्जा रखी थी। धन्यवाद के पात्र है राजा हरिश्चन्द्र रानी तारामती पुत्र रोहितास जिन्होंने अपने साथ सात करोड़ का उद्धार किया।2।

द्वापर युग में नौ करोड़ पार कैसे उतर गये जिस युग में शूल से शरीरों को सुखाया जाता था। साधु सेवकों के लिये भगवान स्वयं ही आ जाते हैं। भक्तों के कष्ट को वे अपना स्वयं का ही कष्ट मानते हैं। एक हरि ही अपने जन के साथ सम्पर्क स्थापित करते है। युगों-युगों में शरीर धारण करते है। जैसा युग होता है वैसा ही कार्य करते है। द्वापर युग में सतगुरु ने आकर सच्चे तथा झूठों की परीक्षा करते हैं। बुद्ध रूप धारण करके राक्षसों व नास्तिकों को हराया तथा बौद्ध धर्म की स्थापना की थी। इस प्रकार से युग-युग में धर्म की स्थापना करते हैं। पांच पाण्डव माता कुन्ती धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने नौ करोड़ जीवों का उद्धार किया है।3।

कलयुग में बारह करोड़ प्राणियों का उद्धार करने के लिये हरि ही स्वयं गुरु रूप धारण करके आये है। जिन्होंने भगवा वस्त्र धारण किया था, उस गुरु का स्मरण कीजिये। ऐसा सुरजन जी का कथन है भगवा वस्त्र धारी गुरु देव की वाणी को समझो। इस बार शब्दों से ही अधिक लगाव है ऐसे ज्योति स्वरूप सम्भराथल पर प्रगट हुए हैं। काल से परे अलख, अनादि मूरत गुरुदेव की वाणी युगों-युगों तक जीवित रहकर प्रकाश करती रहेगी। अनन्त करोड़ों का उद्धार करने वाले अलख निरंजन कलयुग में आये हैं और बारह करोड़ का उद्धार करेंगे।4।

साभार- **साखी भावार्थ प्रकाश**

अब करणों है त्याग

समाज हो हमारा
कुरीतियों से मुक्त
सभ्य समाज की खातिर
अब करणो है त्याग
अपनी रूढ़िवादी संस्कृति का....

बदले विचार सबके
इक बेटी के प्रति
आँगन की तुलसी है ये
न समझे कोई इसे अपनी पराई
बेटी को पढ़ाओ
बेटी को बचाओ

समाज में ही नहीं
बल्कि पूरे जग
बेटी-बेटा का भेदभाव मिटाओ...

इक नन्ही परी को मत मारो
यू कोख में
बेटी की खातिर
अब करणो है त्याग
अपनी संकीर्ण सोच का....

सब मिलकर रहे
इस जग में
न कोई लड़ाई, न झगड़ा हो
आपसी भाईचारे भावना के लिए
अब करना है त्याग
अपने क्रोध ओर अभिमान का....

-नेहा बिश्नोई
वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय,
जोरावरपुरा, हनुमानगढ़

द्विकाल संध्या करो

'दोनों समय संध्या-वन्दना करो' उन्नतीस नियमों में यह भी एक महत्त्वपूर्ण नियम है। आदि वैदिक काल में भी दोनों समय संध्या-वन्दना करने का आदेश नियम है। सूर्योदय की बेला में दिन-रात की सन्धी है तथा सूर्य अस्त होने की बेला में भी दिन-रात की सन्धी है। प्रात:कालीन वेला में रात्रि का जाना और दिन का आगमन होता है। सांय काल में भी दिन का जाना और रात्रि का आना सन्धी बेला है। इस समय का कर्ता सूर्य है, सूर्य ही समय का विभाग करता है। जाम्भोजी ने कहा भी है -

अरुण विवांणौ रै रिव भांणै, देव दिवाणे, विष्णु पुराणे।
कांय भळंख्यो तै आल पिराणी, सुरनर तणी सबेरु ॥54॥

सूर्योदय के समय आकाश-लालिमा युक्त हो जाता है। यही सूर्य की किरणें ही उनका विमान है। उसी विमान पर सवार होकर सूर्योदय होता है। यह सूर्य ही देवताओं का दीवान है। यही विष्णु पुराण है। यही से कथा तथा सृष्टि का संचालन होता है। सूर्य ही अपना प्रतिबिम्ब संसार को प्रदान करता है। जिससे सम्पूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति, पालन-पोषण, विकास होता है। विष्णु का यही विधान है जो सर्वत्र व्यापक होता है, प्रत्येक व्यक्ति, जीव-जन्तु, वृक्ष व आदि को प्रत्येक श्वास के साथ ऊर्जा प्रदान करता है। जिससे हम सभी जीवन धारण करते हैं। यही कृष्ण पुराण है। यहीं से कृष्ण-कृषि की कथा प्रारम्भ होती है। अन्न, जल, श्वास प्रदाता यही सूर्य नारायण है। जब सूर्य उगता है तो सभी पशु-पक्षी, दरखत आदि गाना गाते हुए खुशी प्रगट करते हैं। हे प्राणी! हे मानव! आप सोते रहे। आपने इस दिव्य समय को खो दिया।

"कायं झंख्यो तै आल पिराणी।"

हे प्राणी! ऐसी संध्या बेला में तुम क्यों आल-बाल, झूठ-कपट, निंदा भरी वार्ता बोलता रहा।

"जान कै भागी कपिला गाई, कूड़ तणौ जे करतब कीयो नातै लाव न सायो।" शब्द-7

सूर्य उदय-अस्त ही दिन-रात का विभाग करता है। सूर्य ही मौसम बदलता है।

'घड़ी घटंतर पहर पटंतर, रात दिनंतर, मास पखंतर, रिवण ओल्हरबा कालूं'। (सबद- 31)

सूर्य ही घड़ी, दिन, रात, पक्ष, मास, वर्ष आदि का विभाजन करता है। अन्य कार्य तो समय-समय पर किये जाते हैं किंतु भगवान विष्णु की उपासना, वंदना, प्रार्थना, संध्या बेला में ही करणीय है।

इसी सबद में आगे गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि -

इण्डो फूटो बेला बरती, ताछै हुई बेर अबेरु।
मेरे परै सो जोयण, बिम्बा लोयण।
पुरुष भलो निज बाणी, बांकी म्हारी एकाजोती।
मनसा सास विवाणी।
को अचारी अचारे लेणा, संजमे शीलै सहज पतीना।
तिहि अचारी नै चीन्हत कौण, जांकी सहजे चूकै आगौण।54

आकाश रूपी अण्डे से सूर्य रूपी बालक जन्म लेता हुआ दिखता है। इसी से समय का परिवर्तन दिन-रात होते हैं। आगे कहते हैं कि मेरे से भी परे देखे, वह बिम्ब रूपी ब्रह्म सभी का नेत्र है। वह सूर्य ही है जो "चक्षों सूर्यो अजायत" यह सूर्य, चन्द्र दो परमात्मा की आँखे हैं। चन्द्रमा मन है और सूर्य हमारी आत्मा है। यही हमारा मूल तत्त्व है। गुरु देव कहते हैं कि वह पुरुष सूर्य नारायण सबसे अच्छा एवं श्रेष्ठ है देवों के भी देव महादेव हैं। यह वाणी-शब्दवाणी उसी की है। वहीं से जाम्भोजी कहते हैं कि वाणी आती है, इसलिये कहा कि **"म्हे सरहै न बैठा सीखा न पूछी, निरत सुरत सब जाणी।"** आगे कहते हैं कि **"बांकी म्हारी एका जोती।"** उनकी और मेरी एक ही ज्योति है, उस ज्योति-ऊर्जा को हम सभी **"मनसा सास विवाणी"** मन से तथा श्वास से ग्रहण करते हैं। श्वास वायु तो वाहन है इसी वाहन पर बैठाकर ऊर्जा शक्ति हमारे अंदर कण-कण में प्रवेश करती है। उससे ही हम जीते हैं। यही हमारी आत्मा है जो प्रतिक्षण श्वास -प्रश्वास के साथ ग्रहण कर रहे हैं। इसलिये कहा है "घट घट अघट रहायो"। जहाँ भी जाते हैं वही हमें जीवनी शक्ति ऊर्जा प्राप्त हो जाती है। **"एति श्वास फुरंतै सारू" ॥67॥**

कोई आचरण करने वाला ही सत्यता को जान सकता है उसे आत्मसात कर सकता है। वह आचरण संयम, शील, सहजता से होता है। ऐसे आचरण वाले व्यक्ति को पहचानता है उसकी सहज ही में जन्म-मृत्यु, छूट जाती है। उस परम ज्योति से अपनी ज्योति का विलय कर लेगा तो वह महाज्योति हो जायेगा। किसका जन्म और किसका मरण होगा ?

"एक बूंद सागर में मिल गई, क्या करेगा यमराज।
सतगुरु ऐसा तत्व बतावै, जुग जुग जीवै बहुरी न आवै॥"

संध्या बेला केवल हरि का स्मरण, हवन, जप, तप क्रिया करने के लिए ही होती है। वह समय इन आध्यात्मिक कार्य के लिए सर्वोत्तम है। अन्य सांसारिक कार्य से इस शुभ बेला में परहेज करें।

इस संध्या की शुभ बेला में सबद 30 में कहा है-

स्वामी पवणा पाणी नवंण करंतो, चंदे सूरे शीस निवंतो"

"विष्णु सुरा पोह पूछा लहंतो" (सबद-30)

देवता वही होता है जो देता है हमारे जीवन जीने के लिए क्या चाहिये, वह कौन देता है। स्वामी-ईश्वर, पवन, पानी, सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी आदि ये पाँचों तत्त्व ही हमारे जीवन के आधार है। हम इनसे ही जीवनी शक्ति ग्रहण करते हैं। ये ही हमारे देवता है क्योंकि देते हैं। हम अपने घड़े को उल्टा न करें।

"घट ऊँधै बरसंत बहु मेहा, नीर थयो पण ठालू", "को होय सी राजा दुर्योधन सा, विष्णु सभा मह लाणौं" ॥57॥

अर्थात् दुर्योधन की सभा में भगवान विष्णु ही कृष्ण के रूप में आये थे किन्तु उस अहंकारी ने अपना घड़ा उल्टा कर लिया था जिससे कृष्ण के द्वारा अमृत वर्षा ज्ञान की एक बूंद भी उस घड़े में दुर्योधन के दिल-दिमाग में प्रवेश नहीं कर सकी। यही दशा अहंकारी जनों की होती है। जिससे महाभारत होता है।

घड़े को सीधा रखो। भगवान की अपार कृपा, ज्ञान की वर्षा हो रही है, उसे ग्रहण करो। इसलिये कहा है कि **"जे नविये नवणी, खविये खवणी, जरिये जरणी, करिये करणी, तो सीख हुआ घर जाइये॥"**30

सूर्य, चन्द्र, पवन, पाणी, स्वामी, ईश्वर को नमन करो। "जो सुरनर तणी सवेरु" यह सवेरा उन्हीं से होता है। नमन करेंगे, सिर झुकाऐंगे तो हमारा अहंकार गिर जायेगा। यह दिल-दिमाग रूपी घड़ा सीधा हो जायेगा। तभी ज्ञान भर सकेगा। यह संध्या बेला में करना चाहिए, वह उत्तम बेला है। उस बेला का महत्त्व है। घर आई हुई कपिला गऊ को मत भगाओ।

संध्या बेला में सुबह स्नान करके नित्य कर्मों से निवृत होकर सूर्य का प्रथम ध्यान करें। ध्यान उसी का होता है जिसे हमने देखा है। सूर्य को देखते हैं, परिचित है ध्यान होगा। एकाग्रता से जितनी भी देर ध्यान करें उतनी देर तक बीच में किसी प्रकार के दूसरे विचार नहीं आने चाहिए। इससे आपमें ऊर्जा शक्ति का प्रवाह अंतर प्रवेश करेगा। आप बल, बुद्धि के निधान हो जायेंगे। जैसा कि हनुमान जी, कर्ण, रामचंद्रजी, जाम्भोजी आदि ने सूर्य से ही ऊर्जा, ज्ञान, शब्द ग्रहण किया था। वह आप भी कर सकते हैं। ओम का त्रिमात्रा में उच्चारण होता है। विष्णु का जप होता है। ओम विष्णु का साथ में जप नहीं होता है। केवल ओम का उच्चारण और विष्णु का जप यही विधि विधान है।

इसी प्रकार से सायं की संध्या में भी हाथ-पैर धोकर कुछ समय प्रभु का स्मरण करें। "यज्जपस्तदर्थ भावनम्" जो भी जिस भी नाम का जप करे उसके साथ भावना भी जुड़नी चाहिए तभी वह जप सार्थक फलदायी होता है।

"ओम विष्णु सोहं विष्णु, तत्व स्वरूपी तारक विष्णु।"

वही ओम, वही विष्णु है वही तारने वाला है तप, जप करते समय 'ओम विष्णु' ऐसा क्यों हैं। एक से ही कार्य होता है तो दो नाम मिलाने का क्या प्रयोजन है। गुरु जाम्भोजी ने अपनी बुआ तांतू को संध्या मंत्र सुनाया था और कहा कि 'विसन विसन तूं भण रे प्राणी, साधां भक्ता उधरणौ।' हे प्राणी! विष्णु-विष्णु-विसन-विसन ऐसा नाम का जप कर इसी नाम के जपने से साधु भक्तों का उद्धार हो गया है। हे बुआ जी! अब तक इक्कीस करोड़ तो तीन युगों में पार पहुँच गये हैं और कलयुग में मैं बारह करोड़ का उद्धार करने आया हूँ। उन्हीं बारह करोड़ों में बुआ तांतू आप और हम भी है।

"कलयुग बरतै चेतो लोई, चेतो चेतण हारूं।
सतगुरु मिलियो सतपंथ बतायो, अवर न बूझबा कोउ।"

-आचार्य कृष्णानंद
बिश्नोई धर्मशाला, मायाकुण्ड, ऋषिकेश
मो. 9897390866

गुरु जाम्भोजी ने कहा- मैं ब्रह्म हूँ और मैं वही हूँ

गुरु जाम्भोजी ने शब्द - 67 (अइयां उइयां, निरजत सिरजत..., आप कुसती आप सती) में कहा है - यहाँ से वहाँ जड़ चेतन, छोटी-बड़ी, जितनी भी जीव योनियां हैं, उन सबकी संभाल मैं क्षण मात्र में ही लेता हूँ। परमेश्वर कृपा से अनगिनत फुहारे बरसती हैं, मैं उनकी भी गणना कर सकता हूँ। मैं ऐसा असम्भव कार्य भी सम्भव कर सकता हूँ। मेरा रहस्य कोई नहीं जानता। मेरे पूर्व रहस्य का किसी को पता नहीं है। मैं अलक्ष्य और अभेद रूप हूँ, कैवल्यज्ञानी हूँ या ब्रह्मज्ञानी हूँ अथवा ब्रह्मचारी हूँ। यह कोई नहीं जानता। मैं अल्प-अहारी हूँ या नहीं, पुरुष हूँ या संसार में लुब्ध और स्वादी हूँ, जोगी या भोगी अथवा संयोगी हूँ अर्थात् स्वयंभू अकेला हूँ या सांसारिक भोगों को भाव रूप में ग्रहण करता हूँ अथवा भोगता हूँ। लीलापति हूँ या नहीं अथवा आनन्ददाता या मायापति हूँ या नहीं। सूम हूँ या दाता हूँ। सत्यवादी हूँ या असत्यवादी हूँ, यह कोई नहीं जानता। मैं सूम भी हूँ और दाता भी हूँ, सत्यवादी हूँ और असत्यवादी भी हूँ। मैं गुण धर्मों का आश्रय होकर भी उन सबसे परे हूँ। इन सब बातों से यह प्रकट होता है कि वे (जाम्भोजी) स्वयंभू हैं।

इसी तरह शब्द-शब्द में उनका ब्रह्म रूप हमें दिखाई पड़ता है, देखें- **'मोरे छाया न माया, दया ध्रम थापिलै निरजण सो बाळो ब्रंभचारी'** अर्थात् अन्य लोगों की भांति मैं मायाच्छायादित नहीं हूँ। इस शुद्ध स्वरूप चैतन्य आत्मा में पंच भौतिक शरीर की भांति लहू, मांस, रक्त और धात नहीं है और न ही मेरे माता-पिता हैं। मैं अपने तत्त्व स्वरूप में हूँ और अपने ही आधार पर स्थित हूँ। मैं न आत्मा हूँ, न शरीर हूँ। मैं न किसी पर कुपित होता हूँ, न स्वयं दुखी होता हूँ। मैं न किसी को दुख देता हूँ न, शाप। मैं दृष्ट भी हूँ, अदृष्ट भी हूँ और ऐसे त्रिलोक में व्याप्त हूँ जैसा कोई नहीं है। मेरी आदि को कोई नहीं जानता। जैसे पृथ्वी पर धुंए को देखकर यह अनुमान होता है कि अमुक स्थान पर अग्नि है, उसी प्रकार मेरी रचना को देखकर लोग मेरी सत्ता का अनुमान लगाते हैं। इसलिए मुमुक्षु को काम, क्रोध और लोभ तीनों शूलों को ज्ञान के द्वारा दूर करना चाहिए। मैं जगत का आदि कर्ता हूँ। मैं स्वयंभू हूँ। मेरा सृजनकर्ता कोई नहीं है। मैं ज्ञानी हूँ, ध्यानी हूँ या स्वकर्मों का धारक हूँ, यह कोई कोई नहीं जानता। मैं शोषण कर्त्ता हूँ या पोषण कर्त्ता हूँ अथवा प्रतिबिम्ब के समान दृश्यमान जगत को प्रतिभासित कर रहा हूँ, इसे भी कोई नहीं जानता। जो मनसा, वाचा, कर्मणा में दया और धर्म का पालन करता है, दोष रहित और बालक की भांति निर्मल, पाप-पुण्य में अछूत, वही ब्रह्माचारी है और वही मेरे ब्रह्म स्वरूप का बोध कर सकता है।

गुरु जाम्भोजी स्वयंभू थे। इस बात का उल्लेख उन्होंने अपनी वाणी में बार-बार किया है। ऐसी ही पक्तियाँ उनके शब्दों की देखें-

'तद होता एक निरंजण सिंभू, कै होता धंधूकारूं।'
(सबद-4)

अर्थात् तब जब कुछ नहीं था, तब उस समय माया रहित स्वयंभू था, अथवा धुंधकार था।

'जपा तो एक निरालम्भ सिंभू, जिंहिं के माई न पिऊं।'
(सबद- 5)

अर्थात् जाम्भोजी कहते हैं कि हम तो एक निराकार, निरालंभ, निरंजन, स्वयंभू का जप करते हैं। जिसके न कोई माता है, न कोई पिता है।

'अल्लाह अलेख अडाल अजोनी स्वयंभू, जिंहिं का किसा विनाणी।' (सबद-6)

अर्थात् वह मूलतत्त्व परब्रह्म है जो अज्ञेय है, स्वस्वरूप में स्थित है, स्वयंभू है। आप से आप उत्पन्न हुआ है। वह जन्म-मरण से परे है। उसका विनाश कैसा ?

'लेखा एक निरंजण लेसी, जहाँ चीन्हों तक पायो।' (सबद-19)

अर्थात् इसका हिसाब-किताब स्वयं निरंजन ही लेगा

और कोई नहीं। जिन्होंने इस परमत्त्व को पहचाना है, उसने ही इसे पाया है।

'अलाह अलेख अडाल अजूनी सिंभू, पवण अधारी पिंड जलूं। (सबद-51)

अर्थात् - वह मूलतत्त्व परब्रह्म है जो अज्ञेय है, स्वरूप में स्थित है, स्वयंभू है। उसके शरीर को प्राणवायु या जल की आवश्यकता नहीं है। वह इस स्थिति में ही उन्हें प्राप्त कर लेता है।

'तिन किणि खैंच न सकै, सिंभू तणी कमाणूं'। (सबद-58)

अर्थात् ऐसा बाण अन्य कोई नहीं खींच सका जैसा स्वयंभू ने सीता के लिए खींचा था। यहाँ गुरु जाम्भोजी अपने राम रूप में स्वयंभू होने की ओर संकेत करते हैं।

'म्हे सिंभू का फरमाया आया, बैठा तखत रचाई।' (सबद-85)

अर्थात् हम स्वयंभू की आज्ञा से यहाँ आये हैं, यहाँ आसन पर विराजमान हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि स्वयंभू स्वयं ही अपनी आज्ञा से यहाँ आसन पर जाम्भोजी के रूप में विराजमान है।

'ओं आद सबद अनाहद वाणी, चवदै भुवण रह्या छलि पाणी।
जिंहिं पाणी से इण्ड उपना, उपना ब्रह्मा इन्द्र मुरारी॥' (सबद- 93)

अर्थात् ब्रह्माण्ड में व्याप्त आदि शब्द 'ओउम्' है जो अनहद नाद के रूप में गुंजायमान है। सृष्टि निर्माण से पूर्व चौहदे भुवनों में सर्वत्र पानी ही पानी था। जब स्वयंभू को सृष्टि रचना की इच्छा हुई तो उसने पानी में अण्डे (हिरण्यगर्भ) की उत्पत्ति की। फिर ब्रह्मा इन्द्र और मुरारी की उत्पत्ति की।

'सहंस्र नांव साई भल सिंभू उपना आदि मुरारी।' (सबद-94)

अर्थात् आदि विसन (मुरारी एक है) पर उस स्वामी के हजारों नाम हैं और वह अनेक रूपों में उत्पन्न होता है।

'आपै अलख उपनौ सिंभू, निरह निरंजण कै धंधूकारू।' (सबद-105)

अर्थात् अगोचर स्वयंभू अपने आप ही उत्पन्न हुआ है। सृष्टि निर्माण से पूर्व निराकार निरंजन स्वयंभू था और धुंधलेपन की स्थिति थी। इसी शब्द के अंत में यह पंक्ति- **'आपै अलस उपनों सिंभू, निरह निरंजण के हुता धंधूकारूं' पुनः आई है। इससे स्पष्ट है कि स्वयंभू स्वयं उत्पन्न हुआ है।**

'सुरगां हुंतो सिंभू आयो कहो कुणाकै काजै।' (सबद-118)

अर्थात् स्वर्गों में रहने वाला स्वयं यहाँ किस कार्य हेतु आया है। ऐसा प्रश्न यह उस समय उपस्थिति जन-साधारण से पूछते हैं और इसका उत्तर स्वयं ही उन्हें देते हैं। शायद लोगों को इस उत्तर का पता नहीं है।

इसके अतिरिक्त अन्य बहुत से शब्दों में ऐसा उल्लेख है, जिससे यह प्रतीत होता है कि वे स्वयंभू हैं और उन्होंने ही इस सृष्टि की रचना की है, देखें- आदि अनादि तो हम रचीलौ, हमै सिरजीलो स कौण (सबद -2), म्हे तदि पणि हुतां अब पणि अछां वळि वळि हुयस्यां कहि कदि कदि का करूं विचारूं (सबद-4), नव अवतार नमो नारायण ते पणि रूप हमारा थीयौं (सबद-5), म्हे सरै न बैठा सीख न पूछी, निरति सुरति सा जाणी (सबद-6), रूप अरूप रगूं पिण्डै ब्रह्मण्डै घट-घट अघट रहायौ। अनंत जुगां मां अमर भणीजूं, नां मेरे पिता न मात्रौ (सबद-19), म्हां देखंतां देव दाणों सुर नर सीणां, जंबू मंझे राचि न रहिबा थेहूं (सबद-25), आयसां मृगछाला पावड़ी कांय फिरावो, मतूंत कायदा उगवंतो भाण ठभाऊँ (सबद-116) इसी शब्द की अंतिम पंक्ति भी यहीं पुनः दी गई है। हम ही जोगी हमही जती हमही सती हमही राखिबा चितूं (सबद-47), नान्ही मोटी जीवा जूणी, एती सांस फुरंतै सारूं (सबद-3), यही पंक्तियां शब्द -67 में भी हैं। दया रूप म्हे आप बखाणां, सिंघार रूप म्हे आप हती (सबद-67), कांही मारूं, कांहीं तारूं, किरिया विहूणां पर हथ सारूं (सबद-72), च्यारि चक नव दीप है रह रै, जो आपो परगासूं (सबद-73), जे म्हां सूता रैण विहावै, परतै विला वारू। चंद भी लाजै सूर भी लाजै, लाजै धर गैणारूं (सबद-80)। पुनः इसी

सबद में 'जे म्हां सूता रैण विहावै, तो बहुत हुवै कसवारू। जुग अनंत अनंता वरत्या, म्हे शून्य मंडल का राजूं (सबद-83), एक खिण मांहि तीनि भुंवण म्हे पोषां, जीवा जूणी सवाई। एक खिणि मांहे सरब उपाया, जीवा जूणि सबाई (सबद-85) नवखण्ड प्रथमी प्रगटियो, कोई बिरला जाणंत म्हारा, आदि मूळ का भेवूं (सबद-88), तांह परै रै तेपण होता, तिंहका करूं विचारूं (सबद-89), म्हे आपै आप हुवा अपरंपर, हो राजेन्द्र लेह विचारूं (सबद-105), गुरु प्रसादे, केवल ज्ञाने, सहज स्नाने यह घर रिद्ध सिद्ध पाई (सबद-109), अवजूं मंडल हुई अवाजूं, म्हे सून्य मंडल का राजूं (सबद-117)।

अहं ब्रह्मास्मि (मैं ब्रह्म हूँ) और सोहमस्मि (मैं वही हूँ) के रूप में गुरु जाम्भोजी ने अपनी वाणी में बार-बार उल्लेख किया है और अपने उपदेश मानने की बात कही है। उन्होंने उस आदि विसन के स्मरण की बात कही है और मनुष्य को 'विसन विसन तूं भण रे प्राणी' का संदेश दिया है। हालांकि उन्होंने उस 'विसन' के सहस्र नाम बताये हैं और अवतारवाद की भावना को स्वीकार किया है लेकिन स्मरण उस 'आदि विसन' को करने का कहा है। अन्य सभी धर्मों के लोगों ने भी इसे एक परमात्मा कहा है। हिन्दू इसे 'ओउम्' कहते हैं। सिक्ख इसे 'इको ओंकार' कहते हैं। मुसलमान इसे 'खुदा, अल्ला अथवा रिबल आलमीन' कहते हैं। हिन्दू धर्म शास्त्रों में भगवान के लाखों-करोड़ों नाम हैं। कहा है-

हरी के हजार नाम, लाख नाम कृष्ण के।
केशो के करोड़ नाम, पदम नाम विसन के॥

गुरु नानकदेवजी कहते हैं- मालिक के असंख्य नाम हैं जो जुबान द्वारा गिने नहीं जा सकते। देखे -

तेरे नाम अनेकां रूप अनंतां कहणु न जाही तेरे गुण केते (म. 4 - 1135)

मालिक की प्राप्ति के लिए सतगुरु में सत्य बोलना स्वीकार था। त्रेतायुग में यज्ञ आदि क्रियाओं का विधान था और द्वापर में अच्छे कर्म का विधान था। लेकिन कलियुग में एक नाम साधन ही स्वीकार है। इस कलियुग में नाम के बिना और कोई साधन है ही नहीं, जिस द्वारा जीव मुक्ति पद को प्राप्त कर सके। कलियुग में कोई कर्मकाण्ड आदि फलदायक नहीं है। विष्णु पुराण में भी इसी सिद्धान्त को स्वीकार किया गया है। कलियुग में नाम का महत्त्व दिया गया है। सतयुग में ध्यान, त्रेता में यज्ञ और द्वापर में पूजा आदि द्वारा जो परमपद की प्राप्ति होती थी, इस कलियुग में केवल हरि सिमरन द्वारा प्राप्त की जा सकती है। स्कंध पुराण में भी इसी तरह का वर्णन आता है। दुनिया में मन, वचन तथा कर्म द्वारा किया कोई भी भयानक से भयानक कर्म ऐसा नहीं जो कलियुग में नाम सिमरन करके नाश नहीं हो जाता। गुरु अर्जुन देव कहते हैं -

कलियुग महि इक नामि उधारू, नानकु बोलै ब्रह्म बीचारू।

गुरु जाम्भोजी ने भी अपनी वाणी में कहा है- 'कलिजुग बरतै चेतो लोई, चेतो चेतण हारु।' गुरु जाम्भोजी निर्गुण ब्रह्म को मानते हैं। ब्रह्म के दो रूप हैं- एक मूर्त्त या व्यक्त जिसको सगुण-साकार कहते हैं तथा दूसरा अमूर्त या अव्यक्त जिसको निर्गुण-निराकार कहते हैं। गुरु जाम्भोजी ने परमसत्ता-परमेश्वर निर्गुण ब्रह्म को 'विसन' नाम से अभिहित किया है। उन्होंने इसी निर्गुण विसन की उपासना बताई है। इसी के नाम स्मरण पर सर्वाधिक बल दिया है। उन्होंने संध्या वंदना मंत्र में भी कहा है- '**विसन विसन तूं भणि रे प्राणी, साधां भगतां उधरणों।**' इसी तरह ही उन्होंने सबदवाणी में बार-बार 'विसन' नाम स्मरण का मनुष्य को संदेश दिया है। कुछ उदाहरण देखें-

'विसन विसन भणि अजर जरीजै लाहो लीजै पह जाणीजै।'

'विसन विसन तूं भणि रे प्राणी ईह जीवण कै हावै।'

'विसन विसन तूं भणि रे प्राणी विसन भणंतां अनंत गुणूं।'

'विसन विसन तूं भणि रे प्राणी पैंके लाख उपाजूं।'

एक शब्द में तो उन्होंने 'विसन' नाम न जपने से

जो अनेक हानि होगी उसका उल्लेख किया है। निर्गुण का तात्पर्य है- परमेश्वर का वह रूप जो सत् रज और तम - तीनों गुणों से परे और रहित है। वह निराकार होता है। सगुण का अर्थ है- ईश्वर का वह अवतारी रूप जो इन तीनों से युक्त है, वह साकार होता है। हालांकि गुरु जाम्भोजी एक अवतारी पुरुष थे और बारह कोटी जीवों के उद्धारार्थ अवतरित हुए थे, लेकिन उन्होंने नाम स्मरण उस निराकार, निरंजण, निरालम्ब सिंभू, अजोनी सिंभू, निरंजण सिंभू की बताई। सगुण नाम रूप है और नाम रूप नश्वर है। निर्गुण अनश्वर है। इस कारण गुरु जाम्भोजी ने निर्गुण ब्रह्म (विसन) की उपासना बताई। उन्होंने इसको सर्वव्यापी, घट-घट में व्याप्त बताया।

यहाँ यह बात विशेष रूप से ध्यान रखने की है कि गुरु जाम्भोजी द्वारा बताया गया 'विसन' निर्गुण है। वह त्रिदेवों ब्रह्मा, विष्णु, महेश में से एक विष्णु नहीं है। इसी निर्गुण विसन से इन सगुण 'त्रिदेवों' का आविर्भाव हुआ है। उनका कथन है- 'ब्रंभा विष्णु महारुद्र यरप्या, दीवी करामति केती वारी।' अर्थात् स्वयंभू परमेश्वर (आदि अनादि विसन) ने ब्रह्मा, विष्णु और महेश, इन त्रिदेवों की स्थापना की तथा कितनी ही बार विभिन्न रूपों में अवतार लेकर अद्‌भुत कार्य किये। उन्होंने पुनः कहा है - 'दयारूप म्हे आप वखाणां, सिंधार रूप म्हे आप हती।' अर्थात् दयालु होकर मैं स्वयं ही जीवनदान देता हूँ, मैं स्वयं ही मारता हूँ और मरता भी स्वयं ही हूँ। उस आदि विसन का उल्लेख हिन्दू शास्त्रों में अनेक जगह हुआ है। यहाँ तक कि विष्णु पुराण में भी निर्गुण सगुण का स्पष्टीकरण दिया गया है। वह निर्गुण 'विसन' ब्रह्मा, विष्णु और शंकर रूप से जगत की उत्पत्ति, स्थिति और संहार के कारण है तथा जो अपने भक्तों को संसार-सागर से तारने वाले हैं।

एक सच्चे बिश्नोई को भी खासकर 'विसन' और 'विष्णु' में फर्क समझना चाहिए। गुरु जाम्भोजी ने आदि विसन के स्मरण का संदेश दिया जो निर्गुण-निराकार है। सगुण-साकार विष्णु की उत्पत्ति उस आदि विसन ने ही की है। विष्णु स्मरण के नाम से अभिप्राय सगुण साकार विष्णु भी 'विसन' ही लिखा है। जाम्भोजी की सबदवाणी में भी यही 'विसन' लिखा है। इसी के विषय में ही गुरु जाम्भोजी ने 'अहम् ब्रह्मास्मि' तथा 'सोहमस्मि' (अर्थात् मैं ब्रह्म हूँ और मैं वही हूँ) कहा है।

-डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई
बी-111, बिश्नोई भवन, समतानगर
लालगढ़ पलेस के पास, बीकानेर (राज.)
मो.: 9460002309

खेजड़ली शहीदों को शत् शत् नमन्

363 एक संख्या नहीं है
यह गाथा है बलिदान की
सोये हुए आज के युग के लिए
बीते हुए कल के स्वाभिमान की
पेड़ों की रक्षा के लिए
शहीद हुए हर इंसान की
इतिहास का वो दिन खेजड़ली की कहानी याद दिलाता है
सुनकर ही ये सब आँखों में पानी भर आता है।
जो किया इन शहीदों ने हमारे लिए
अब हम सबकी बारी है
संकट में है विश्व की धरा
इसे बचाने की अब हमारी जिम्मेदारी है।

-संदीप ईशरवाल
सुपुत्र श्रीराम कुमार जी
प्रेमपुरा ढ़ाणी संगर, त.सुरतगढ़,
जिला श्रीगंगानगर (राज.)

कृष्ण के दृष्टिकोण-आज के सामाजिक सन्दर्भ में

हिन्दू धर्म में हम कृष्ण को गुरु मानते हैं। मेरे अनुसार कृष्ण केवल गुरु ही नहीं हैं बल्कि उनसे भी ऊपर है। क्योंकि गुरु तो अन्धकार से प्रकाश में ले जाते हैं। कृष्ण ने तो अन्धकार को नजरअंदाज करते हुए भूत-वर्तमान और भविष्य के प्रकाश को स्थापित करने का कार्य किया है। कृष्ण ने इंद्र को छोड़कर प्रकृति पूजन को बताया। यह भी किसी सूर्य के प्रकाश से कहाँ कम है? लेकिन आज के समय के अनुसार गोवर्धन तक ही पूजन समाप्त नहीं होना चाहिए, बल्कि अंधाधुंध प्रकृति दोहन के कल्चर में जब हम कॉलोनी के बागों की स्थापना कर उनका पोषण करते हैं तो भी कृष्ण की याद आती है। जब हम हमारे मोबाइल पर स्क्रीन गार्ड्स और कवर लगाते हैं तब भी वही याद आते हैं कि 'जो चीज तुम्हारे लिए फायदेमंद है उसकी सुरक्षा करो उस पर पूरी श्रद्धा रखो। अपनी पॉजिटिव एनर्जी उसे दो।'

कृष्ण खुद शासक होकर मनुवाद की अवधारणा को बदलते हैं। वे कहते हैं तुम भौतिक रूप में मनु की संतान हो सकते हो लेकिन स्वरूप (अपने सही रूप) में आत्मा हो- यहां वे एकत्व की बात करते हैं। बताते हैं कि हम सभी में एक ही बीज है। राजा से लेकर रंक तक और विशालकाय व्हेल से लेकर ना दिखाई देने वाले जीवाणुओं में एक शब्द 'आत्मा' से समानता स्थापित कर लेना कितने गहन अध्ययन का परिणाम है! और केवल बताया ही नहीं, अपने गरीब दोस्त सुदामा के पैर अपने आंसुओं से धोकर यह साबित भी किया कि उनकी दृष्टि सभी के लिए एक जैसी ही है। कथनी-करनी में फर्क नहीं है।

आत्मा की अवधारणा बताते हुए कृष्ण मृत्यु का भय भी मिटा देते हैं। वे कहते हैं,

नैनं छिदन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥

आत्मा को न शस्त्र काट सकते हैं, न आग उसे जला सकती है, न पानी उसे भिगो सकता है, न हवा उसे सुखा सकती है। हम अपने आत्म-स्वरूप में अमर हैं और जो अमर है उसे मृत्यु का डर कैसा? कृष्ण बिना डर के जीने की प्रेरणा दे देते हैं।

अध्यात्म की गहराइयों के साथ ही कर्मशील होने को भी कृष्ण कहते हैं। एक बार हम न्यूटन की गति के तीसरे नियम पर एक नजर डालें- Every action has Reaction-Equal and Opposite- कृष्ण भी तो हमारे actions की सीमा बता देते हैं- **'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'** कहकर। कहते हैं- तुम्हारा अधिकार सिर्फ कर्म तक ही है, फल तुम्हें तुम्हारे कर्म के अनुसार मिल ही जाएगा- Equal and Opposite- एनर्जी ट्रांसफॉर्मेशन भी का मूलभूत सिद्धांत यही है। तभी तो ओशो सरीखे विद्वान् भी यही मानते हैं कि 'कृष्ण हुए तो अतीत में- लेकिन हैं भविष्य के।'

ऑर्गेनिक खाद्य की तरह ही कृष्ण ने उचित खाने की प्रेरणा भी दी है। मक्खन-मिश्री जैसे घर के बने पदार्थ फास्ट-फूड से कहीं बेहतर हैं। हम सभी इन बातों को अब फिर से समझ पा ही रहे हैं। घर में ही स्वास्थ्यवर्धक भोजन हो इसके लिए गाय जैसे पालतू पशुओं और पर्यावरण सरंक्षण हेतु जो कार्य श्री कृष्ण ने किये वे भी अनुसरणीय हैं।

संगीत के जरिये हम स्वस्थ और खुश रह सकते हैं। उच्च हैप्पीनेस इंडेक्स वाले राष्ट्रों का अध्ययन करें तो हम निःसंदेह ही पाएंगे कि उन्होंने अपने वातावरण को संज्ञान में लेते हुए संगीत निर्माण और उसका प्रयोग भी किया है। हमारे देश में बांस की खेती होती है तो बांसुरी एक सर्वसुलभ वाद्य यंत्र है, जिसका स्वर हमारे वातावरण को प्रतिध्वनि युक्त संगीत से गुंजायमान कर हमें न सिर्फ मानसिक शान्ति देता है वरन् कोशिकाओं के स्वास्थ्य और रक्त संचार आदि शारीरिक

गतिविधियों को भी अच्छा करता है। कृष्ण ने इतने वर्षों पूर्व म्यूजिक थेरेपी बतलाई, इसके लिए उनका दिल से धन्यवाद बनता ही है।

कृष्ण योगीराज हो कर्म और ज्ञान की सही दिशा भी दर्शाते हैं। योगबल पर वे सूक्ष्म शरीर के साथ विचरण करते हैं, जिसे आज कई गुरु Out of Body Experience का टाइटल देते हैं। यहां कृष्ण बताते हैं कि किसी भी बात को मानो नहीं जानो। अनुभव का ज्ञान और ज्ञान का प्रेक्टिकल अनुभव करके ही आप उस ज्ञान पर शासन कर सकते हैं। कृष्ण योग कर योगीराज बने –बिना योग किये नहीं अथवा केवल योग की किताबें पढ़कर नहीं।

कृष्ण आत्म संयम की बात भी करते हैं –

'ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥'

आज के समय में जब ग्लोबल वॉर्मिंग बढ़ती जा रही है, अपने आप पर नियंत्रण रखना– खुद को कूल रखना उतना ही जरूरी है, जितना कि सही भोजन करना। इस श्लोक में कृष्ण कहते हैं कि भौतिक चीजों के बारे में लगातार सोचते रहने पर उनसे एक बंधन (bond) बन जाता है। उन्हें पाने की इच्छा होती है और नहीं पा पाए तो क्रोध आता है। यहाँ कृष्ण अपनी ही एक बात को उल्टा कहते हैं। गीता के एक श्लोक में वे अर्जुन को जीतने पर धरती पर राज करने की बात करते हैं और दूसरी तरफ इस श्लोक में अनासक्ति की।

यहाँ थोड़ा सा अलग हटकर मैं कहना चाहूंगा कि विदेशों में लॉ ऑफ अट्रैक्शन की एक अवधारणा आई थी। उस पर विस्तार से कभी फिर चर्चा करेंगे, लेकिन यह कुछ इसी तरह की है कि जिस वस्तु को पाने की हमारी तीव्र इच्छा होती है, उसका उचित तरीके से मनन करें तो वह हमें प्राप्त हो सकती है। हालाँकि उचित तरीके से उस वस्तु आदि की फ्रिक्वेंसी तक पहुंचना एक प्रकार का योग ही है, लेकिन इस प्रयोग को करने में भी काफी लोग अपनी फ्रिक्वेंसी वहां तक नहीं पहुंचा पाते हैं और गुस्से व निराशा का शिकार हो जाते हैं। कृष्ण ने यहाँ इन्द्रिय संयम की बात कही है कि 'पाने के लिए कर्म जरूर करो लेकिन ना मिलने पर निराश नहीं हो।' जिस तरह अपनी एक कविता में हरिवंश राय बच्चन कहते हैं कि 'असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो।'

कृष्ण समय आने पर प्राथमिकताएं तय करने में एक सेकण्ड भी नहीं लगाते। तुरंत निर्णय ले लेते हैं। दुशासन द्वारा द्रोपदी के वस्त्र उतारने पर वे अपने मित्रों का जुए में सब कुछ हार जाने का दु:ख, अत्याचारियों से अपने सम्बन्ध आदि को भुला कर सबसे पहले वे द्रौपदी को वस्त्रहीन नहीं होने देते और यहीं, इसी स्थान पर जहां द्रौपदी के साथ दुर्व्यवहार हो रहा था, वे हम सभी को समझा देते हैं कि धृतराष्ट्र की तरह अंधे मत बनो– पुत्र या किसी भी मोह में अपनों द्वारा किये जा रहे दुष्कर्मों पर आँखें मत मींचो, ना ही भीष्म की तरह कुर्सी से बंधित हो ब्रह्मचारी होकर भी ऐसे दृश्य चुपचाप देखो और सबसे बड़ी बात किसी सदियों पुराने दरबारी की मानसिकता की तरह, भावनात्मक रूप से कठोर या उदासीन हो, अपने मोबाइल में ऐसे कृत्यों के वीडियो मत बनाओ। साथ ही ना तो पांडवों की तरह राज्य हारने के दु:ख में अपने ही स्वजनों की रक्षा करने में असमर्थ–असहाय बनो और ना ही दुर्योधन–दुशासन की तरह जीत के घमंड में ऐसे कार्य करो जिनसे बाद में पछताना पड़े और अपना रक्त दूसरों को पिलाना पड़े। साथियों, कृष्ण बनने का अवसर मत छोड़ो।

कृष्ण के चरित्र पर कई लोग कहते हैं कि उन्होंने 16000 शादियां की थीं, लेकिन इस बात को सही तरीके से समझें तो वह यह है कि एक दुष्प्रवृत्ति के व्यक्ति ने 16000 लड़कियों के साथ रेप किया था और कृष्ण ने उन सभी को अपनाया। प्रश्न यह उठता ही है कि सदियों पहले का यह सन्देश क्या आज के समाज के लिए उपयुक्त नहीं है?

कृष्ण अपने दुश्मनों को भी सुधरने का समय देते हैं। वे प्रहार तभी करते हैं जब बात सिर के ऊपर से गुजर जाए। ऐसे गुण हमें आज और भविष्य के व्यक्तियों में चाहिए हीं। वे कहते हैं 'अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्' जब-जब अधर्म की वृद्धि होती है- तब धर्म की उन्नति के लिए मैं आता हूँ। इसका अर्थ यह नहीं कि हम धर्म की हानि होने पर कृष्ण के आने का इन्तजार करें। नहीं!! बल्कि कृष्ण के उन कर्मों का आज के समयानुसार अनुसरण करें, जो उन्होंने अपने समय में धर्म की हानि को देखकर किये थे। कृष्ण हम सभी में हैं। यह जान लें और अपने भीतर स्थित कृष्ण को समय आने पर अवतरित जरूर करें। धर्म की हानि हमारे अंतर (भीतर) में भी होती है अपने अंदर के कंस को मारकर आंतरिक कृष्ण को जीवित रखना आप-हम सभी का कर्म है- कर्तव्य है और यही तो कृष्ण चाहते हैं- आप में रहना।

-डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी
पीएच.डी. (कंप्यूटर विज्ञान)
सहायक आचार्य (कंप्यूटर विज्ञान)
3 प 46, प्रभात नगर, सेक्टर-5, हिरण मगरी,
उदयपुर-313 002 (राज.)
मो. 9928544749
ईमेल: chandresh.chhatlani@gmail.com

पेड़ का दर्द

जिन्दगी देता हूँ हर किसी को,
चल फिर नहीं सकता हूँ मैं,
मतलब यह नहीं कि जान मुझमें नहीं,
मैं पेड़ हूँ, मेरा दर्द समझो।
तू चाँद पर गया,
माना तू मंगल पर भी जाएगा,
मेरे बगैर जीवनदायिनी कहाँ से लाएगा,
मुझे खत्म कर, बड़े उद्योग लगाए तूने,
मैं पेड़ हूँ, मेरा दर्द समझो।
मुझे खत्म कर, बड़े उद्योग लगाए तूने,
अपने लिए आलिशान महल बनाए तूने,
पर मेरे बगैर अपनी चिता कैसे जलाएगा,
मैं पेड़ हूँ, मेरा दर्द समझो।
बहुतों ने सिर कटाए मेरे लिए,
हँसते-हँसते दे गए अपनी जान,
परन्तु अफसोस,
तू अब भी ना मान पाया,
मेरी अहमियत,
मैं पेड़ हूँ, मेरा दर्द समझो।

-मीनाक्षी सुपुत्री उग्रसेन खिचड़
सदलपुर
मो. 9053662709

वे परमात्मा मेरे

माता मेरी है श्री, पिता मेरा है शब्द ओम,
माता पिता की सेवा में सेवका है लीन मन रोम रोम
मैं उनका धर्म पुत्र हूं वे धर्मात्मा मेरे
मैं आत्मा उनकी वे परमात्मा मेरे ॥1॥
माता मेरी प्रसन्नता है पिता का है मुझे प्रमोद,
भण्डार है आन्नद का माता पिता की गोद।
यह प्रेम का अनुराग हृदय पर जमा मेरे ॥2॥
मैं आत्मा उनकी वे परमात्मा मेरे,
मुझको वह महादेव और वे महामाई,
माता पिता के रूप में देते हैं दिखाई।
कर देते हैं अपराध वही क्षमा मेरे ॥3॥
मैं आत्मा उनकी वे परमात्मा मेरे
देकर भी प्राण भार हरण नहीं हो सकता,
माता पिता के ऋण से उऋण नहीं हो सकता।
रंग रंग राधेश्याम ये है राम ॐ रामा मेरे,
मैं आत्मा उनकी वे परमात्मा मेरे ॥4॥

-भूराराम बिश्नोई
सेवक सदस्य, भा.ज. सेवक दल,
जिला शाखा सिरसा

गुरू जाम्भोजी का अवतार

बिश्नोई पंथ के संस्थापक गुरु श्री जाम्भोजी का अवतार सम्वत् 1508, भादो वदी अष्टमी सोमवार को पीपासर गांव में हुआ था। पिता श्री लोहटजी, माता हांसा देवी थे। लोहट जी ने पुत्र प्राप्ति के लिए घोर तप किया था। तप के प्रभाव से भगवान ने दर्शन दिए और पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया। बारह करोड़ जीवों के उद्धार के लिए गुरु जम्भेश्वर भगवान का अवतार हुआ। गीता में लिखा है कि 'जन्म कर्म च मे दिव्यम्' भगवान का जन्म, कर्म अलौकिक होते हैं तथा साधारण मनुष्यों की तरह नहीं होता।

1) बाल्यकाल सात वर्ष (सम्वत् 1508-1515)।
2) गौचारण काल सत्ताईस वर्ष (सम्वत् 1515 से 1542 तक)।
3) बिश्नोई पंथ प्रवर्तक चौंतीस वर्ष की आयु में (1542), ज्ञानोपदेश काल 51 वर्ष (सम्वत् 1542 से 1593 तक)। जम्भेश्वर भगवान साक्षात विष्णु के अवतार हैं। छुआछूत, भेदभाव मिटाकर सब जातियों को बिश्नोई बनाया। कल्याण के मार्ग पर चलने के लिए उनतीस नियमों का पालन करने के लिए मनुष्यों को उपदेश दिया।

धार्यते इति धर्म, जो अच्छी बात को धारण करते हैं उसको धर्म कहते हैं। मनु महाराज दस धर्म धृतिक्षमा अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, विद्या, सत्य आदि धर्मों का उपदेश दिया। रामायण में तुलसीदास जी ने धर्म न दूसर सत्यसमाना- सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। 'सत्यं परं धीमहि' भागवत् में आया है-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्हम्॥

जब-जब धर्म की हानि होती है, तब-तब प्रभु अवतार धारण करते हैं।

अवतार का प्रयोजन-

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भावामि युगे-युगे॥

साधु भक्तों की रक्षा करने के लिए, पाप कर्म करने वालों का विनाश करने के लिए और धर्म की भली-भांति स्थापना करने के लिए युग-युग में भगवान प्रकट हुआ करता हूँ।

वर्तमान समय में धर्म का ह्रास और पाप वृद्धि हो रही है। भगवान अवतार क्यों नहीं लेते? इसका समाधान है कि युग को देखते अभी वह समय नहीं आया है जिसमें भगवान अवतार लें। त्रेतायुग में राक्षसों ने ऋषि-मुनियों को मारकर, हड्डियों के ढेर लगा दिए थे। कलियुग तो त्रेतायुग से गया बीता है। अभी धर्मात्मा पुरुष जी रहे हैं। दान-पुण्य, सत्संग हो रहा है। अधिक धर्म की हानि होती है, तब भगवान अवतार धारण करते हैं।

-दिव्य चैतन्य शास्त्री पुंवार
82, मॉडल टाउन, मण्डी आदमपुर
मो. 9253868354

याद बड़ा आएगा

जरा नजर उठाकर देखिये,
ऊपर खुला आसमान नजर आएगा।
दूर शहरों से जंगल में,
बेजुबान जानवरों का संसार नजर आएगा।
मत काटो इतना इस जंगल को नहीं तो,
एक दिन भयावह मंजर नजर आएगा।
इस प्रदूषण रूपी दलदल में,
हर कोई फंसता नजर आएगा।
कटते पेड़ घटते जीव,
सिलसिला बस ये बढ़ जाएगा।
मुश्किल होगा जीवन जीना तेरा,
पर्यावरण तुझको याद बड़ा तब आएगा।

-अश्वनी साँवक सुपुत्र श्री राजपाल साँवक
11 टी के रायसिंहनगर
मो.: 8890545477

TEACHINGS OF GURU JAMBHESHWAR JI IN THE CONTEXT OF GLOBAL WARMING

Global warming has become a serious environmental threat for the human survival over the past few years, and turning a deaf ear to its warnings can prove hazardous. The causes, effects, and complexities of global warming are important to understand to make the changes necessary for a healthier planet. Global warming implies an increase in the average temperature of the Earth due to entrapment of greenhouse gases in the earth's atmosphere. Excessive burning of fossil fuels coupled with population growth, technological advancement, industrialization, urbanization, and deforestation lead to an increase in the production of greenhouse gases which include carbon dioxide, chlorofluorocarbons, water vapour, methane, and nitrous oxide. The gradual build up of these gases has caused the average global temperature to rise overtime, otherwise known as global warming. Global warming causes climate change, which poses a serious threat to life on earth in the forms of widespread flooding and extreme weather abnormalities.

Human activities such as deforestation, land use changes, fossil-fuel combustion, the excess use of fertilizers, the decomposition of wastes in landfills have not only lead to soil erosion, but also have prompted increase in climatic variability in many parts of the world. Urbanization and industrialization, which our modern civilization depends upon, have a devastating effect on the processes of climate change. The industrial activities have raised atmospheric carbon dioxide levels from 280 parts per million to 400 parts per million in the last 150 years. Human activities produced carbon dioxide is the most important long lived "forcing" of climate change. It is gradually developing into an unprecedented environmental crisis evident in melting of glaciers, sea level rise, changes in weather patterns, heavy downpour, and increased frequency of cyclones, severe longer droughts, more intense heat waves. While there are uncertainties on the nature and extent of the impending changes, it is certain that climate induced variability and change will affect the agricultural yields and food security drastically. Crop production in large areas of the world is likely to decrease leading to world-wide food scarcity. Even extinction of various plants and animals is predicted. The effect on people would depend on how well we can adapt to the changes and how much we can do to reduce the emission of carbon dioxide and other greenhouse gases thus reduce climate change.

Global warming is one of the most vexing environmental crises faced by mankind. Governments, scientists and environmentalists all over the world are aware of the dangers and are trying to meet the challenge. Several international agencies and inter-governmental panels are engaged in formulating and implementing programmes for reducing the rate of global heating. The situation can recover only if we incorporate the teachings of Guru Jambheshwar in our everyday life. He was India's foremost environmentalist, who founded the Bishnoi faith in 1485 and laid down 29 principles to be followed by Bishnois. Of these, six are extraordinary-they cover environmental protection and compassion for all sentient beings.

Guru Jambheshwar lived in an era very

different from our own, but his ideas still hold relevance in today's world. He recognized the importance of trees and animals within his local ecosystem and banned cutting down of trees and animal slaughter. He insisted on consumption of plant-based diet. He advocated a simple lifestyle. Guru Jambheshwar's spiritual reverence for nature led to a tradition of unity with the ecosystem. His teachings lay emphasis on protecting the invaluable gift of God i.e. nature. Since the faith is based on love, non-violence, peace, compassion and kindness, it advocates harmony among all the creations of the God. Bishnois follow a system of sharing resources with the wildlife around them. They have made a positive contribution in the world through their environment-friendly practices. In spite of living in the arid desert regions for centuries, they have been following the dictates of their religious principles for centuries.

In 1730 AD, a small village located 26 km south-east of Jodhpur in Rajasthan witnessed the first and most fierce environment activism in the history of the world. The king of Jodhpur wanted to build a new palace. He sent soldiers to gather wood from the forest region near the village of Khejarli, where Bishnoi villagers had helped foster an abundance of khejari (acacia) trees. When the king's men ignored the pleas of the villagers to cease deforestation, Smt. Amrita Devi of Khejarli village and her three young daughters laid down their lives to protect these sacred trees. Then, other villagers also encircled the trees and refused to let go, as a result, they were killed in the process by the soldiers. Total 363 Bishnois sacrificed their lives for the protection of trees that the king's men had come to cut down to fuel the cement lime kilns for the king's palace. When the king came to know about these events, he rushed to the village and apologized, ordering his soldiers to stop logging operations. Soon the Maharajah declared the region as a protected area, forbidding any hostile activity against the trees and animals. This legislation still exists today. In memory of the 363 Bishnois, a large number of khejari trees have been planted around the area, which is still notably lush with flora and fauna. They laid down their lives to serve the greater good of humanity and left behind a legacy of kinship, generosity, charity and altruism. Their sacrifice became an inspiration for the much larger Chipko movement, in which villagers defended the forest against commercial logging by embracing trees.

Moreover, various reports and studies on climate changes suggest that protecting and restoring forests and urgently revamping the global food system through dietary change are the key solutions to the escalating land and climate crisis. It is broadly understood that every single calorie of energy saved, every new tree planted, every tree maintained and every bit of organic material saved from burning, contribute to an enormous amount of fall in global temperature. Guru Jambheshwar's broad vision, his wisdom and admiration for all being have encouraged future generations to appreciate the natural world for its own sake and to defend the environment in any possible way.

-Aayushi
MA English, NET
9/53 New Campus
CCS Haryana Agricultural University,
Hisar

विश्नोई कौन?

कर्म नहीं किये ऐसे, धर्म वंशजों ने हमारे।
जो भय के गुम अधरों में, सूख जाए प्राण हमारे॥
राजाओं से ली टक्कर, और बाहरी ताकतों से भी।
सत्य धर्म की रक्षा हेतु, दी प्राणों की आहुति भी॥

जन मानस के बीच बार-बार एक प्रश्न उभरता रहता है कि बिश्नोई कौन होते हैं? जिसका स्पष्ट व संतुष्टिकरण जवाब हमारे कुछ सामाजिक बंधुओं के पास नहीं होता और अनेकों तथ्यों द्वारा स्वयं के साथ-साथ दूसरों को भी भ्रमित करते रहते हैं।

हमें या हमारे बच्चों को 'बिश्नोई या विश्नोई' नाम से किंचित मात्र भी भयभीत या भ्रमित होने की आवश्यकता नहीं है। अपितु यह वो श्रेष्ठ धर्म समाज है जो सृष्टि के प्रारम्भ से मरूधरा की देव भूमि पर विराजमान है और अपने नि:स्वार्थ भाव से प्रकृति के संतुलन हेतु निरीह जीवों व हरे वृक्षों के रक्षार्थ अपने अमूल्य प्राणों की आहुति देता आ रहा है। सौ ऐसे धर्म समाज में जन्मे हैं या हमारे आसपास कोई ऐसा धर्म, समाज है जो नि:स्वार्थ भाव से पर्यावरण, जीव प्रेमी, शुद्ध शकाहारी और सात्विक जीवन यापन करने वाला है।

'बिश्नोई' नाम कोई टूटा-फूटा शब्द या किसी का शाब्दिक अर्थ नहीं है। वरन् ये विश्वास व अन्तरात्मा का वो वट वृक्ष है जो सृष्टि के मूल पालनकर्ता भगवान विष्णु का हर क्षण मानवता संग समस्त मानव जाति को बोध कराता है। (मानवता की राह चलने चलाने वाला और ईश्वरीय सत्ता से प्रेम करने वाला) जो सृष्टि के प्रारम्भ से मृत्यु लोक में फैला हुआ है जिसका अनेकों महान व पवित्रात्माओं ने समय-समय पर अमृत पान करते हुए अमानवीयता को मानवता की सत्य राह दिखाई और समयानुसार नये नियमों की पगडंडियां दी।

सतयुग में राजा हरिश्चन्द्र व हिरण्यकश्यपु के पुत्र विष्णु भक्त प्रह्लाद ने इस वट वृक्ष का अमृतपान करते हुए अपना जीवन धन्य किया और परब्रह्म भगवान विष्णु के भक्तों को संगठित कर एक सूत्र में बांधा था, जो कालान्तर में समयानुसार बिखरते चले गये।

विक्रमी संवत् 1542 (सन् 1485 ई.) कार्तिक वदी अष्टमी के पर्व पर कलयुगी विष्णु अवतार गुरु जाम्भोजी के सान्निध्य से बिश्नोई अपने अस्तित्व में आए और 29 नियमों की पालनार्थ विष्णु उपासक बिश्नोई कहलाए।

विक्रमी संवत् 1508 भाद्रपद कृष्णाष्टमी (कृष्ण जन्माष्टमी) की अर्धरात्रि को ठकुराइन हंसा की सूखी बगिया (भरेपूरे परिवार के बीच मात्र हंसा जी के कोई संतान नहीं थी) में तेजोमय लाली लिए एक दिव्य सुकोमल फूल खिला। चहुं और चहक उठे हिरन मोर पक्षी सारे। पशुधन भी सुर में अपने गीत गाने लगे। देख पावन हो गई पीपासर की सारी नगरी। जाम्भोजी नाम जिसको मिला (समय का अचम्भा था जो) ग्वाल-गोपाल संग क्या खेले। सात वर्ष तक मौन रखा और जब खेले कृष्ण रूप की जाम्भो रूप में नई-नई लीला।

भीषण अकाल लिए विक्रमी संवत् 1542 आसोज का महीना, आग उगल रहा था। मनुष्य जीव संग पशुधन त्राहि-त्राहि करने लगा। पेड़-पौधे, जमीन सब सूखने लगे। देख भक्तों की पीड़ा। अदृश्य शक्ति द्वारा सबका मन मंथन किया और आर्थिक मदद से संतुष्ट करके सबकी पीड़ा हरी।

अनेकों रंक-राजा, ज्ञानी-ध्यानी, कृषक-व्यापारी आदि नतमस्तक हो चरणों में शीश झुकाते थे। घूम-घूम नगरी श्रीवर ने पर्यावरण जीव प्रेमी मानवता की अलख जगाई। फिर क्यों भूले उनको जिसने मानवता की बिश्नोई नाम से माला पिरोई।

'राग द्वेष न जाने, सुख समझे जन सेवा को'

-हरिओम बिश्नोई
गुरुद्वारा रोड, नई बस्ती, बिजनौर
मो. 9012339705

जीव रक्षा: गुरु जाम्भोजी और महात्मा गांधी के परिप्रेक्ष्य में

अहिंसा धर्म ही नहीं धर्म का पहला द्वार है। साथ ही साथ इसे सौहार्द का त्योहार भी कहा जा सकता है। याद रहे हिंसा कभी भी धर्म नहीं हो सकती, चाहे वह हिंसा किसी देवी-देवता के लिए या उनके नाम से ही क्यों न की गई हो। अहिंसा और सत्य हमारे देश के सर्वोत्तम सिद्धांतों में से एक रहे हैं। श्री गुरु जाम्भोजी और जाम्भाणी कवियों, संतो का मानना है कि जब तक मानव सहित किसी भी प्राणी की आँख में आंसू रहेंगे, तब तक हमारा अहिंसा और सत्य का सिद्धान्त अधूरा ही माना जायेगा। हमें निज सोच में भी स्वच्छता लानी होगी, हिंसा और झूठ का भाव मन से हटाना होगा तभी अहिंसा और सत्य का पालन पूर्ण रूप से हो सकता है।

अध्ययन से स्पष्ट हुआ हुआ कि कहीं न कहीं महात्मा गाँधी की अहिंसा का जुड़ाव/लगाव जाम्भाणी अहिंसा से रहा है क्योंकि जो अहिंसा का मार्ग बिश्नोई पंथ के संस्थापक गुरु जाम्भोजी ने बिश्नोई पंथ को दिया था। चार सौ साल आगे चल वही अहिंसात्मक मार्ग राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने अपनाया ही नहीं, बल्कि जीवनभर निभाया भी। दोनों ही विचारधाराओं में किसी प्राणी को कष्ट पहुँचाना पाप माना गया है। दोनों ही विचारधाराओं में गौ माँ को विशिष्ट स्थान दिया गया है।

(भाग-1)

श्री गुरु जाम्भोजी और गौ रक्षा/जीव रक्षा :-

जीव दया का उल्लेख गुरु जाम्भोजी ने अपने कालजयी एवं अमर वाणी में अनेकों बार किया है। उन्होंने जीवन में दयाभाव रखने का उपदेश दिया है। दया एक सात्विक वृत्ति है, जो समता का मूल है। उन्होंने दयाभाव को हृदय की उदारता का प्रतीक मानते हुए इसे भेदभाव का भेदक बताया है। एक सबद में गुरु जाम्भोजी ने कहा है कि 'दया से शरीर में स्थित आत्मा बिम्ब रूप में स्पष्ट होने लगती है।'

गुरु जाम्भोजी ने निज वाणी के सबद संख्या 20 में कहा है :-

जां जां दया न मया तां तां विक्रम कया।
जां जां दया न धरमूं तां तां विक्रम करमूं॥

अर्थात् गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि 'जिन लोगों के मन में दया और प्रेमभाव नहीं है, उनके सभी क्रिया कर्म दूषित है। दया एक तरह से 'शील' का ही अंग है। गुरु जाम्भोजी की अहिंसा में मूक पादप प्राणी पेड़-पौधे भी शामिल हैं। उन्होंने बिश्नोई पंथ की स्थापना कर 'जीया न जुगति और मरां न मुक्ति' वाली कालजयी वाणी के साथ-साथ 29 धर्म नियमों की आचार संहिता भी प्रदान की है। इन 29 धर्म-नियमों में दो नियम '**जीवों पर दया करना और हरा वृक्ष ना काटने**' है ।

गुरु जाम्भोजी ने जीव हिंसा करने वाले हर व्यक्ति को फटकार लगाई और उन्हें जीवों पर दया करने का उपदेश दिया। गाय की हत्या पर मुसलमानों को फटकारते हुए सबद 12 में कहा है:-

महमंद महमंद न करि काजी..... तुंमी भया मुरदारू।

अर्थात् गुरु जाम्भोजी कहते हैं 'हे काजी! मुहम्मद-मुहम्मद मत करो, क्योंकि तुम सही रूप में पैगम्बर मुहम्मद साहब को नहीं जानते हो। तुम समझते हो कि जीव हत्या करते हुए तुम मुहम्मद के मार्ग का अनुसरण कर रहे हो, तो तुम्हारी सोच गलत है। मुहम्मद साहब का विचार बहुत गंभीर है। मुहम्मद के हाथ में जो छुरी थी वह लोहे की बनी हुई नहीं थी और न इस्पात की। (पैगम्बर मुहम्मद साहब से पहले उनके समान एक लाख अस्सी हजार पैगम्बर और सिद्ध पुरुष धरती पर आ चुके थे। इनमें आदम पहले और हजरत मुहम्मद साहब अन्तिम नबी थे) गुरु जाम्भोजी कहते हैं 'मुहम्मद तो हलाली मर्द थे यानि न्याय विहित कमाई खाने वाले थे। मरे हुए जीवों को खाने वाले तो तुम्ही हो।'

गुरु जाम्भोजी सबद 8 में कहते हैं कि:

सुणि रे काजी सुणिं रे मुल्ला.....थे
पढ़ सुणि रहिया खाली॥

अर्थात् हे काजी! हे मुल्ला! सुनो। तुम किसकी सिरजी हुई बकरी को मारते हो? किसकी सिरजी हुई भेड़ गाय को मारते हो। भगवान के बनाए हुए इन निरीह पशुओं/प्राणियों को मारकर सुख और स्वर्ग की आशा करना व्यर्थ है। तुम्हारी चोट की पीड़ा अत्यंत दु:खदायी होती है। उससे बचने के लिए हम पर आश्रित पशु भाग कर कहाँ जाएं? अत: हे भाई! इन प्राणियों पर प्रहार मत करो,

उन्हें मत मारो। हे तुर्को! एक ओर तो तुम इन पशुओं पर छुरी चलाते हो तथा इन्हें मार कर अभक्ष्य का भक्षण करते हो/खाते हो और दूसरी तरफ स्वर्ग पाने का दावा भी करते हो। यह कैसे सम्भव हो सकता है?

गाय आदि दुधारू पशु दिनभर जंगल मे घूमकर चर-फिर कर आते हैं और सहज ही मालिक को दूध दे देते हैं। उनका दूध पीना तो जायज है परन्तु उन्हीं के गले पर छुरी चलाना कहाँ तक उचित है।

इसी प्रकार गुरु जाम्भोजी सबद 7 में एक हिन्दू ब्राह्मण को फटकारते हुए कहते हैं:

सोम अमावस आदितवारी, कांय काटी वणंरायो।

अर्थात् सोम/रात्रि में चंद्रमा की उपस्थिति में, अमावस्या को जब चन्द्रमा उपस्थित नहीं होता तब और आदित्यवारी/सूर्य की उपस्थिति में तुमने वनों को/पेड़ों को क्यों काटा है। वृक्षों को न तो चंद्रमा की उपस्थिति में काट सकते हैं, नहीं चंद्रमा की अनुपस्थिति में (अमावस्या की रात में) और न ही सूर्य की उपस्थिति में काटा जा सकता है। फिर भी तुमने इन अवस्थाओं में पेड़ों को काटने का पाप किया।

इस प्रकार गुरु जाम्भोजी ने गाय सहित सभी वन्य प्राणियों, वनस्पतियों की रक्षा करने का उपदेश दिया है और उनके अनुयायियों ने इन उपदेशों पर चल कर वन्य जीवों और वन्य सम्पदा की रक्षा में समय समय पर अपने निज प्राणों तक की आहुति दी है।

गुरु जाम्भोजी सबद 9 में एक मुसलमान को समझाते हुए कहते हैं कि -

'भाई नाऊं बलद प्यारो। तिंहकै गलै करद क्यों सारो? .....जोय जोय गाफिल करै धिंगांणौ॥'

अर्थात् भाई से अधिक प्रिय बैल है क्योंकि भाई हाथ से साथ देता है लेकिन बैल कन्धे से कन्धा मिलाकर साथ देता है। तुम उसी के गले पर छुरी चलाते हो, क्यों?

हे भाई! तुम ईश्वर की महिमा से अपरिचित हो। ईश्वरीय महिमा को तुमने पहचाना ही नहीं है। तुम दया से रहित हो। गुरु देव पूछते हैं कि तुम कैसे मुसलमान हो?

हे निर्दयी! तूने अपने कर्तव्य कर्म को छोड़कर, धर्म का मार्ग ही खो दिया है। हे गाफिल/कर्तव्य विमुख प्राणी! तुम जीवों पर मनमानी/जबरदस्ती कर रहे हो।

गुरु जाम्भोजी इसी सबद की 15वीं और 16वीं पंक्ति में कहते हैं :-

काहे काजै गऊ विणासौय तो करीम गऊ क्यों चारी।

अर्थात् अगर तुम्हें ईश्वर/अल्लाह से इतना ही प्रेम है, तो तुम गऊवों की हत्या किस कारण से करते हो। यदि गौ हत्या सही होती तो ईश्वर ने द्वापर युग में श्री कृष्ण के रूप में आकर स्वयं गऊवें क्यों चराई थी।

'जीवां ऊपरि जोर करिजैय अंत काल हुयसी भारी॥'

गुरुदेव कहते हैं कि यदि हम पर आश्रित निरीह प्राणियों पर तुम बल का प्रयोग करोगे, तो वह तुम्हारे लिए अंतिम समय में बहुत दुखदायी साबित होगा।

(भाग-2)

गाँधी जी और गऊ रक्षा/जीव रक्षा :

सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार के प्रकाशन विभाग द्वारा अप्रैल, 1967 (चैत्र 1889) में प्रकाशित पुस्तिका 'गांधीजी और गो रक्षा' में गांधीजी की गौ रक्षा से संबंधित उनकी बातों का संकलन किया गया है। गांधीजी ने कहा कि 'मैं बचपन से ही गोभक्त रहा हूँ। मैं उसे सारी सुख-समृद्धि की जननी मानता हूँ। दुनिया के किसी भी देश में गाय या गोवंश की ऐसी दुर्दशा नहीं, जैसी भारत में है। आश्चर्य तो यह है कि भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जहाँ गौ पूजी जाती है। गौ ऐसी स्थिति में लाई जा सकती है और लाई जानी चाहिए कि गौवध में तनिक भी आर्थिक लाभ न रह जाए। पर दुर्भाग्य से दुनिया भर में भारत ही एक ऐसा देश है, जहाँ इस पूज्य पशु को मारना सबसे सस्ता पड़ता है। हम दया-भाव से पिंजरापोल और गौशालाएं स्थापित करते हैं, पर जिस ढ़ंग से वे चलते हैं, उससे दया प्रकट नहीं होती।

यह कहना गलत है कि गाय के दूध की माँग नहीं है। क्या आप नहीं जानते कि चाय का कैसे प्रचार किया जाता है। चाय के पैकेट मुफ्त बांटे जाते हैं। चाय मुफ्त पिलाने के लिए दुकानें चलाई जाती हैं। गाय के दूध का भी आप ऐसे ही प्रचार कर सकते हैं। गोधन और गोरस की उन्नति में डेनमार्क नहीं भारत ही आदर्श बनना चाहिये।

गौ मेरे लिए दया की मूर्ति है। अभी तक हम गोरक्षा से केवल खिलवाड़ करते रहे हैं। पर हमें जल्दी ही वास्तविकता का सामना करना पड़ेगा।

कानून बनाना तो गौ रक्षा कार्यक्रम का सबसे छोटा अंग है। लोग समझते हैं कि बस कानून बनते ही हर बुराई किसी प्रकार के प्रयास के बिना अपने आप मिट जाती है। मैं धर्म के मामले में सरकार के हस्ताक्षेप के विरुद्ध हूँ और

भारत में गौ प्रश्न धार्मिक और आर्थिक दोनों तरह का है।

हिन्दू धर्म केवल कुछ चीजे खाने या न खाने में नहीं है। इसकी आत्मा तो है शुद्ध आचरण और सत्य-अहिंसा का पालन। बहुत से मांसाहारी लोग ऐसे हैं जो दया और सत्य का व्यवहार करते हैं और भगवान से डरते हैं। ये लोग मांस न खाने वाले परन्तु ढोंगी हिन्दू से अच्छे हैं।

हिन्दू धर्म ने केवल हिन्दुओं के लिए गोहत्या का निषेध किया है, सारी दुनिया के लिए नहीं। हम गौ की रक्षा नहीं कर सकते इसी का आगे यह परिणाम होता है कि देश में भूखे, सूखे और हड्डियों के ढांचे वाले लोग दिखाई देते हैं। हमारी सभ्यता दूसरी सभ्यताओं से बिल्कुल भिन्न है। हमारे पशु हमारे जीवन के अंग हैं।

गांधीजी मानते थे कि कानून के बल पर कभी भी गोहत्या सहित सभी जीव हत्या बंद नहीं हो सकती। लोगों को शिक्षा देकर, समझाकर और उनमें दया उत्पन्न करके ही रोका जा सकता है।

गांधी जी ने विभिन्न समाचार पत्रों में अलग-अलग समय में गऊ रक्षा पर अपने विचार इस प्रकार दिये हैं :

1. मेरे लिए गौ सीधेपन की मूर्ति है। गोरक्षा का अर्थ है 'दुर्बल और असहाय की रक्षा। गोरक्षा का अर्थ है मूक पशुओं से प्रेम।' इस पवित्र भावना को श्रम और तपस्या द्वारा बराबर बलवान बनाना चाहिए।

08.06.1921 के यंग इंडिया में महात्मा गांधी जी ने कहा कि 'गौरक्षा को मैं मनुष्य के विकास के इतिहास की सबसे बड़ी घटनाओं में गिनता हूँ। गौरक्षा की भावना से मनुष्य जीवदया का पाठ पढ़ता है। मैं गौ का अर्थ मनुष्य से नीचे सब प्राणियों से लेता हूँ। गौ के द्वारा मनुष्य यह सीखता है कि सब प्राणियों में वही जीवन है जो उसमें है। प्राणीमात्र से मनुष्य का नाता जोड़ने के लिए गौ को ही क्यों चुना गया, यह बात मेरे लिए बिल्कुल साफ है। भारत में गौ मनुष्य की सबसे अच्छी साथी रही है, वह मनुष्य को सब कुछ देती है। वह केवल दूध ही नहीं देती बल्कि खेती भी उसी के कारण होती है। सच तो यह है कि गाय करुण रस की कविता है। यह सीधा-साधा पशु दया की साक्षात् प्रतिमा है, वह करोड़ों भारतीयों के लिए माता है। गौ की रक्षा का अर्थ है, परमात्मा के बनाए हुए सब मूक प्राणियों की रक्षा करना।'

इसी प्रकार 06.10.1921 के यंग इंडिया में महात्मा गांधी जी ने कहा कि 'अभी तक हमने गौ को कसाई के हाथ से बचाने पर ही अपनी शक्ति का अपव्यय किया है लेकिन हम कसाई से बचाने की कोशिश क्यों करें? आखिर कसाई को भी अपना धंधा करना है, गोहत्या के लिए कसाई को दोषी ठहराना ठीक वैसा ही है जैसा अपने बुखार के लिए डॉक्टर के सिर दोष मढ़ना। हमारी घोर उपेक्षा से ही गौ कसाई के हाथ पड़ती है और उसके लिए हम पूरी तरह जिम्मेदार हैं। हमारा यह कर्तव्य है कि हम आर्थिक दृष्टि से गौ को कसाई के हाथ बेचना अनावश्यक और असम्भव बना दें।

19.02.1938 के हरिजन समाचार पत्र में महात्मा गांधी जी ने कहा कि 'सिर्फ भाषण देने से समस्या हल नहीं होती। इसके सम्बन्ध में गहराई से अध्ययन और त्याग करने की जरूरत है। धन-दौलत जमा करके कुछ दान पुण्य करना ही व्यापार कौशल नहीं है। व्यापार कौशल यही है कि हम पशुओं को अच्छी तरह पालना सीखे और लाखों को सिखायें। स्वयं गोरक्षा के आदर्श का पालन करना और इस काम पर धन खर्च करना सच्चा व्यापार है। लेकिन आज नियति उल्टी है। धनी लोग किसी न किसी तरीके से धन जमा करते हैं और थोड़ा पैसा गौशालाओं को दान करके, समझ लेते हैं कि पुण्य कर लिया। इन गौशालाओं में पशुपालन से अनभिज्ञ व्यक्ति नौकर रखे जाते हैं। यह इतनी कठिन समस्या है कि शायद इसको हल करने के लिए उससे भी अधिक कार्यक्षमता की जरूरत है, जितनी स्वराज्य लेने के लिए चाहिए।

17.02.1948 के हरिजन समाचार पत्र में महात्मा गांधी जी ने कहा कि 'मेरे लिए गोरक्षा, महज गाय की रक्षा नहीं है। गो सब प्राणियों की प्रतिनिधि है, गो की रक्षा का मतलब है- दुर्बल असहाय और मूक प्राणी की रक्षा करना। मनुष्य सारी सृष्टि का मालिक नहीं, बल्कि उसका सेवक है। उसके लिए तो गाय दया की जीती जागती तस्वीर है। अभी तक हम गोरक्षा का नाम भर करते रहे हैं, लेकिन जल्दी ही हमें वास्तविकता का सामना करना पड़ेगा।

इस प्रकार स्पष्ट है कि गाँधीजी ने गुरु जाम्भोजी की तरह ही गाय के साथ-साथ अन्य सभी मूक प्राणियों पर दया करने को कहा था। अहिंसा दोनों के लिए ही सदैव सर्वोपरि रही। गांधीजी ने गाय को सभी मूक प्राणियों का प्रतिनिधि मानते हुए सभी प्राणियों की रक्षा करने पर बल दिया है।

-पृथ्वीसिंह बैनीवाल बिश्नोई
313, सैक्टर 14, हिसार-125001 (हरियाणा)
मो.: 9518139200, 9467694029

सुरजनजी कृत हरजस

(राग गवड़ी)

अैसा ब्रंभ गियान समझि मन्य मेरा रे ॥1॥ टेक
सायर खारौ चौह दीसा, मांहि निरमळ नीर।
पेट वड पावं नहीं, सीगी मछ की सीर ॥2॥
वन मां पावक प्रजळ्यौ, चौह दीस वस लगाय।
सुसौ सुरंग होय नीसरयौ, स्यंध रहयौ अटकाय ॥3॥
सींगी रीख तपस्या छळ्यौ, करन छळ्यौ करि दांन।
नारद रीख नारी हुवौ, छुटि गयौ अभिमान ॥4॥
रस कस जीभ्या चखीयौ, गुठली रही निराट।
बीज पडो या बीज पै, फिरि लागों अवचाट ॥5॥
वढ ही का वाढया पांगरै, दाहै कुंपळ्य न मेल्ह।
जतन कियां ज़्यौ जीव का, पसरि गई भ्रंम वेल ॥6॥
भुंज़्या ब्रंभ अगंन्य मां, दीन्ही भसम उडाय।
सुरजन सतगुर भेंटीया, अब कुंण आवै जाय ॥7॥

हे मेरे मन ऐसे ब्रह्मज्ञान को समझो। समुद्र चारों और खारा है, लेकिन उसमें भी स्वच्छ जल है, जिसको कोई नहीं पा सकता, उसे केवल सीगी मछ ही प्राप्त करती है। जंगल में अग्नि प्रज्वलित हुई और चारों दिशाओं में बांस के वृक्ष जलने लगे, वहां से खरगोश साफ बच निकला, लेकिन सिंह वहां अटक गया, यह हरि कृपा का फल है। शृंगी ऋषि तपस्या से, कर्ण दान से, नारद मुनि स्त्री के मोह से छले गये और इनका अभिमान चूर हो गया। जीभ्या ने केवल रस के स्वाद को चखा और गुठली को साफ छोड़ दिया, वह बीज पुनः भूमि में गिरकर उगा और वही क्रिया पुनः हरे नहीं होते हैं, इस जीव के यतन करते-करते भ्रम की बेल फैल गई, जो इसे जलाती है। अपने मन को ब्रह्म की अग्नि में भून कर भस्म कर दो। कवि सुरजनदासजी कहते हैं कि मुझे सतगुरु मिल गये हैं और मेरा आवागमन मिट गया है।

(राग आसा)

कहया न होई भइया कीया होई, अैसें भरम मत भूलौ काई ॥1॥टेक
गहि आतर करि तुरी नचावै, रिण-झूझै सोई सूर कहावै ॥2॥
पतिभरता पीव के मन्य मानी, विभचारण्य भूली बहकानी ॥3॥
तन चौपड़ि मंन खेलणहारा, पासा पेम चित चलण विचारा ॥4॥
कहणी साच रहणी अपारा, जन सुरजन भजि उतरौ पार ॥5॥

हे भाई ! कहने से कुछ नहीं होता है, करने से होता है, इस कहने के भ्रम में न रहो। अपने हाथ में घोड़े की लगाम को पकड़कर उसे नचाता है लेकिन इससे कुछ नहीं होता है। युद्ध में जो सम्मुख लड़ता है, वही शूरवीर कहलाता है। पतिव्रता स्त्री अपने पति को बहुत प्यारी होती है, परन्तु जो कुलटा स्त्री है, वह भूल से गलत रास्ते चलती है। यह शरीर चौपड़ के समान है और मन खेलने वाला है, प्रेम पासा रूपी है और चित चलता है। कवि सुरजनजी कहते हैं - जिनका कहना और करना सच है, वे अपार है, ऐसे ही लोग हरि स्मरण से पार उतरते हैं।

साभार- बिश्नोई संतों के हरजस

बधाई संदेश

श्री सुभाषचंद्र ढुकिया, उप निरीक्षक (वर्तमान में रीडर ADG/R&C Crime Against Women Haryana, Panchkula में तैनात हैं) निवासी गांव लालवास, जिला फतेहाबाद को 15 अगस्त, 2019 को विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति मैडल से सम्मानित किया गया है। आपको इससे पहले 15 अगस्त, 2010 में भी सराहनीय सेवा के लिए पुलिस मैडल से सम्मानित किया गया था।

श्री अनिल भांभू, ASI, इंचार्ज आई.टी. सेल, हिसार मंडल, हिसार सुपुत्र श्री रिछपाल सिंह, निवासी मंगाली सुरतिया, हिसार को 73वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर माननीय श्री बनवारी लाल जी, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री, हरियाणा सरकार द्वारा उत्कृष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया ।

रमेश बिश्नोई सुपुत्र हनुमानराम बिश्नोई, निवासी गांव पल्ली, तह. लोहावट, जिला जोधपुर ने 5 से 8 सितंबर तक दक्षिण कोरिया के येशु शहर में एशियन योग फेडेरेशन द्वारा आयोजित 9वीं एशियन योग स्पोर्ट्स चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक जीता। इसके अतिरिक्त आपने योग की ही एक अन्य प्रतियोगिता में कांस्य पदक भी अपने नाम किया।

मोहित बिश्नोई सुपुत्र श्री ओमप्रकाश खदाव, गांव सारंगपुर, जिला हिसार की नियुक्ति जामिया मिलिया इस्लामिया यूनिवर्सिटी, देहली में लोक प्रशासन विषय में सहायक प्रोफेसर के पद पर हुई है।

उपेन्द्र सिंह सुपुत्र श्री कुलदीप सिंह, निवासी गांव मोठसरा, तह. आदमपुर, हिसार हाल 16, मनफूल नगर, बड़वाली ढाणी, हिसार की नियुक्ति बैंक ऑफ इंडिया में प्रोबेशनरी ऑफिसर के पद पर हुई है।

ओम प्रकाश खदाव, निवासी गाँव सारगंपुर, तह. आदमपुर, जिला हिसार की पदोन्नति वन विभाग में वन राजिक के पद से वन मंडल अधिकारी के पद पर हुई है।

अशोक कुमार सुपुत्र श्री सुग्रीव जंवर, गांव चौधरीवाली, जिला हिसार को खेल एवम युवा कार्यक्रम विभाग हरियाणा सरकार द्वारा समाजसेवा के क्षेत्र में हिसार जिले का सर्वश्रेष्ठ युवा पुरस्कार के लिए चुना गया है।

अन्नु सुपुत्री श्री महेन्द्र सिंह डारा, निवासी पिरथला, तह. टोहाना, फतेहाबाद ने हरियाणा शिक्षा बोर्ड की 10वीं परीक्षा 93% अंक लेकर उत्तीर्ण की है।

सिमरन सुपुत्री श्री सुशील कुमार सीगड़, गांव झीड़ी, जिला हिसार ने हरियाणा शिक्षा बोर्ड की 10वीं परीक्षा 91.6% अंक लेकर उत्तीर्ण की है।

आप सभी की इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर बिश्नोई सभा, हिसार व अमर ज्योति पत्रिका परिवार की ओर से हार्दिक बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

आपबीती

बड़ा ही विलक्षण है बिश्नोई समाज

सन् 2016 का दिसंबर महीना था। मैंने हिमाचल घूमने का कार्यक्रम बनाया। हालांकि सर्दी काफी थी और बर्फबारी भी हो रही थी, परंतु इस मौसम में वहां जाने का अलग ही आनंद है। मैंने मनाली जाकर एक होटल में कमरा लिया और रात्रि विश्राम के बाद सुबह एक मोटरसाइकिल किराए पर लेकर घूमने निकल पड़ा। मेरा मोटर साइकिल मनाली से लेह राष्ट्रीय राजमार्ग पर दौड़ रहा था। बर्फबारी के कारण अक्टूबर से फरवरी तक पांच महीने यह राजमार्ग बंद रहता है। लगभग बीस किलोमीटर आगे जाने पर कोठी जोनाबाद नामक स्थान पर रास्ता बंद हो गया। बर्फ की सफेद चादर ओढ़े हिमालय रास्ता रोके खड़ा था, इससे आगे जाना संभव नहीं था। चारों तरफ बर्फबारी हो रही थी। रास्ते सुनसान थे। मेरे सिवाय दूसरा कोई यात्री सड़क पर दिखाई नहीं दे रहा था। मैंने मोटरसाइकिल वहीं रोक दी। सर्दी काफी बढ़ी हुई थी। तापमान शून्य से बीस डिग्री सेल्सियस नीचे था। मुझे चाय पीने की इच्छा हुई, मैंने इधर-उधर नजर दौड़ाई तो सड़क के किनारे एक टूटा-फूटा सा मकान दिखाई दिया। मैं उसके पास गया तो वह चाय की दुकान थी परंतु उसका लकड़ी का दरवाजा बंद था। मैंने बाहर से आवाज लगाई- 'क्या एक कप चाय मिलेगी? एक अधेड़ उम्र के आदमी ने दरवाजा खोला और मुझे अंदर बैठा कर चाय बनाने लगा। वहां 'मेरी मनाली' नामक एक मासिक पत्रिका पड़ी थी। मैं उसके पन्ने पलटने लगा। आठ-दस पन्ने पलटने के बाद मैं एक लेख को देख कर चौंक गया, जिसका शीर्षक था- 'पर्यावरण संरक्षक बिश्नोई समाज'। मुझे उस लेख को पढ़ता देखकर चायवाला बोला- 'बड़ा विलक्षण समाज है यह। आश्चर्य होता है कि ऐसे देवदूत अभी भी धरती पर है।' वह समाज का गौरव गान कर रहा था। उसे सुनते-सुनते मैं शून्य में चला गया। मेरी दृष्टि सामने खड़े हिमालय की गगनचुंबी चोटी पर स्थिर हो गई। मैं उसकी उंचाई और अपने समाज के गौरव के उत्तुंग शिखर को नापने की कोशिश कर रहा था कि कौन ऊंचा है। मेरी तंद्रा को भंग करते हुए उसने कहा- 'बाबूजी चाय लीजिए'। उसने अपनी बात जारी रखते हुए कहा कि यहां पास के गांव के प्रोफेसर साहब है। उन्होंने यह लेख लिखा है, जो चार किस्तों में इस पत्रिका में प्रकाशित हुआ है। वे कुल्लू के एक कॉलेज में पढ़ाते हैं परंतु अब गांव आए हुए हैं। मैंने तुरंत कहा- 'क्या मैं उनसे मिल सकता हूं? उसने कहा- 'नहीं बाबूजी, गांव जाने वाले सभी रास्ते बर्फ से ढके हुए हैं।' मेरी पूर्व उत्सुकता और अब निराशा को देखकर चायवाले ने आश्चर्य मिश्रित शब्दों में कहा- 'क्या बाबूजी आप इस समाज को जानते हैं? मैंने प्रात:काल की सुनहरी किरणों से दमकते हिमालय की आभा को भी शर्मिंदा करते हुए अपने प्रफुल्लित चेहरे पर पंथ के गौरव की अपूर्व आभा को प्रकट करते हुए कहा कि- 'मैं केवल इसे जानता ही नहीं, मुझे इस समाज में जन्म लेने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ है।' अब चौंकने की बारी उसकी थी। कुछ पल अवाक् से खड़े रहकर उसने मेरे दोनों हाथों को अपने हाथों में पकड़ लिया और भावविभोर हो गया। मेरे बार-बार मना करने पर भी उसने अपनी दुकान में रखे चार-पांच किलो अखरोट मेरे मोटरसाइकिल पर रख दिए। उससे भावभीनी विदाई लेकर मैं रवाना हुआ। रास्ते भर मैं सोचता रहा कि पंथ की गौरवगाथा को पढ़कर उसने जो मेरा सम्मान किया है क्या मैं उसके लायक हूँ? क्या इस महान परम्परा का संवाहक बनने का बल मेरे कंधों में है? भगवान ने स्वयं अवतार लेकर जिस पंथ का पौधा लगाया तथा वील्होजी जैसे संतों ने अपने तपोबल से और मां अमृता और दूसरे असंख्य बलिदानियों ने अपने खून से सींचकर उस पौधे को पेड़ बनाया। उस पेड़ के फल हम ऐसे आखिरी छोर पर स्थित दुर्गम अनजाने क्षेत्र में भी खा रहे हैं, क्या मैं इसका अधिकारी हूँ? सफर और अपने प्रश्नों से थका-हारा मैं होटल के अपने कमरे में आकर सो गया। स्वप्न में भी मैं अपने प्रश्नों के उत्तर तलाशता रहा। सुबह उठने पर मैं अपने इन्हीं अनुत्तरित प्रश्नों के साथ मंजिल की ओर रवाना हो गया।

-संदीप रायसाहब लोहमरोड़
गांव ठरवा, जिला फतेहाबाद (हरियाणा)
(शब्द संयोजन एवं प्रेषण-विनोद जम्भदास)

किसन पच्चीसी

भरत खण्ड आर्यावृते, अवनी अव्वल अनूप।
मुथर नगर महि ऊपरे, उग्रसेण भल भूप ॥1 ॥
राज करे रंजण करे, रैयत रंज न लेस।
सुख सार समृद्ध सही, कमधज काला केश ॥2 ॥
काला से धोला भया, लङी लटियाला जाण।
कटि दृश लठी आसरे, काल चक्र रे पाण ॥3 ॥
सुता ज्यारे देवकी, कंस कहे राजकुमार।
सुता सुशीला सांतरी, करङो कंश कुंवार ॥4 ॥
राजन अब गम्भीर भये, सुता विवाहे सार।
गादी राजकुमार ने, वन गमने वैवार ॥5 ॥
वसुदेव वसुधा वरेण्य, हितु देवीकी हाथ।
जोङी जुग जुग जीवता, सात जलम रो साथ ॥6 ॥
सिधाई ससुराल सुता, सुत कंस गमने संग।
आभा वाणी आखरी, सुण कंस हुग्यो तंग ॥7 ॥
कंस गल्ल तोय काल री, सुणीये चित लगाय।
कुक्षी भगनी रे काल है, जागो जाग जगाय ॥8 ॥
रमण भमण रग रग भयो, पङ्यो रंग में भंग।
आंख तरेरी आप जद, बदल गया सब ढंग ॥9 ॥
डाफा चूक डगरो भयो, डाचा मारे डील।
भूल्यो होश हवास ने, ढब नहीं राखु ढील ॥10 ॥
मारो मारो मारदो, तकङी ले तलवार।
दफन करण ने दम्पति, खायो जबरो खार ॥11 ॥
वसुदेव अर देवकी, समझायो सौ बार।
सुत जलमें सातां पश्चे, गबरू गुनेहगार ॥12 ॥
परगट कर दूं प्रोल में, जो रिपु राजन जाण।
जांच जरूरी कीजिये, पश्चे लिजीये प्राण ॥13 ॥
नारद मुनि आये नगर में, कंस शंक लिया बुलाय।
उधेङबुन आछी बणी, निवण करे नरराय ॥14 ॥
समाधान समझाइये, मुनि श्रेष्ठ महाराज।
आठ कली आठों अव्वल, पुष्प पिछाणे काज ॥15 ॥
कुण अव्वल कुण अष्ठ है, राजन करो विचार।
जम्यो जिय भङ्कयो भले, मनहुस लेणा मार ॥16 ॥
सातों सुरग सिधारिया, गयो आठवों आय।
कोख देवकी जलमियों, जसुमति पालन धाय ॥17 ॥
आठम अंधेरी रात को, जल में किसन मुरार।
कलि मल काटण कारणे, जम्भ जती तिपुरार ॥18 ॥
जलम्यों मथुरा जेल में, पालन गोकुल गांव।
वसुदेव री छाबली, जमना छूवे पांव ॥19 ॥
नंदराय नाचे खुशी, परमातम खुद पास।
अखम अंधेरी रात को, पूर्ण भयो प्रकाश ॥20 ॥
परवाङा किया घणा, पूर्ण कला अवतार।
नाग कालियो नाथियो, कंस दुष्ट ने मार ॥21 ॥
सिसपालो,जरासंध भले, कालयवन कुर काण।
करण कैरव कारणे, रथ हांक्यो जग जाण ॥22 ॥
पापी पार उतारिया, धरमी ध्रुव समान।
करम जिसो फल देत है, गीता रो गुणगान ॥23 ॥
किन्या सोलह हजार री, गोपी अवर अनेक।
मन इच्छा पूरी करी, उद्धव शिक्षा नेक ॥24 ॥
सज्जन रो संशय कटे, पापी परलय पाय।
धजा धरम री फरहरे, पाप पंयाले जाय ॥21 ॥

-**उदयराज खिलेरी,** अध्यापक
रा.उ.मा.वि. सेसावा (जालोर)
मो.: 9828751199

चौमासे आयो रे ऊपरे बादल छायो रे

बरसो-बरसो मोरा राम, चोमासे आयो रे - टेर
आसाड़ महीने गोकुल छोड़ो मथुरा आयो।
कुब्जा प्यारी ऐ म्हाने मोहन सु मीलदा।
मिठा-मिठा मोरो बोल मोरे राम - 1
आगओ सावन राधा रूकमण मन न समझायो।
जब-जब याद आवे मोहन की हिवड़ा भर-भर आयो।
हालो तेज गावे मेरा राम चोमासे- 2
आगयो भादब घर नहीं यादव इन्दर घर आयो।
उमड़-गुमड़ कर बरसण लागे जद चोमासे आयो।
बीजली चमके मेरा राम चोमासे आयो - 3
आसोजा में आस लागी जब ऊदब संदेशो लायो
कातकी में घर आयो माता देव के जायो।
पपयो बाणी बोले मेरा राम चोमासे - 4
चन्दर सखी ने चाव लागयो जब चोमासे गायो।
धन्य भाग ऐ राधा भागाणी सावरीयो बर पायो।
मुरली मनड़ो मोयो मेरा राम चोमासे - 5

-**रामकुमार खिचड़ सुपुत्र श्री पल्लुराम**
सदलपुर, तह. मण्डी आदमपुर

बिश्नोई पंथ एवं पर्यावरण संचेतना

बिश्नोई पंथ के संस्थापक गुरु जम्भेश्वर विश्व के प्रथम पर्यावरण प्रवर्तक संत माने जा सकते हैं। मध्यकालीन भारतीय समाज में पर्यावरण चेतना को जागृत करने वाले प्रथम वर्णाकार और समुर्णों भुज निर्गुण भक्ति के प्रस्थापक थे। उनके द्वारा दिए हुए विचारों को उनके अनुयायी 'सबदवाणी' या 'जम्भवाणी' के नाम से प्रचारित करते हैं। बिश्नोई समाज में उनके कहे गये विचारों या कहें कि इस सबदवाणी या जम्भवाणी का महत्व इससे ही लगाया जा सकता है कि बिश्नोई पंथ इसको पंचम् वेद कहकर पुकारता है।

गुरु जम्भेश्वर का जन्म एवं बिश्नोई पंथ का उद्‌भव

श्री गुरु जम्भेश्वर बिश्नोई सम्प्रदाय के संस्थापक माने जाते हैं। ये जाम्भोजी के नाम से बिश्नोई सम्प्रदाय में विशेष रूप से लोकप्रिय है। जांभोजी का जन्म पंवार वंश में 1451 ई. (हिन्दू कैलेण्डर के अनुसार भाद्रपद अष्टमी सम्वत् 1508 को) को ग्राम पीपासर, जिला-नागौर, राजस्थान में हुआ।

सन् 1485 ई. बिश्नोई पंथ की स्थापना के बाद जाम्भोजी ने पंथ को सुचारू रूप से चलाने के लिए एक आचार संहिता स्थापित की थी तथा उन्नतीस नियम बनाये। इन उन्नतीस नियमों को मानने वाला उस समय बिश्नोई कहलाया।

यह पंथ राजस्थान में प्रवर्तित सभी सम्प्रदायों में सबसे प्राचीन तथा पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में सर्वोपरि है। बिश्नोई पंथ के साहित्य में प्रत्येक स्थान पर पर्यावरण चिन्तन के तत्व हमें नजर आ सकते हैं। बिश्नोई पंथ के प्रतिष्ठाता गुरु जाम्भोजी समाज सुधारक एवं दिव्य व्यक्तित्व के धनी महापुरुष थे। इनका जुड़ाव सदैव मनुष्य तथा समाज से रहने के कारण इन्होंने अपने शिष्यों को तथा सभी प्राणियों को ममत्व कल्याण के साथ ही पर्यावरण, जीव एवं वृक्षों के संरक्षण का संदेश दिया, जो तत्कालीय युग की परिस्थितियों के साथ-साथ वर्तमान युग के अनुरूप भी है।

बिश्नोई पंथ की करमा और गौरा दो बहनों ने खेजड़ी वृक्ष की रक्षा हेतु ही अपना बलिदान दिया। इस घटना के प्रत्यक्ष दृष्टा संत कवि वील्होजी ने इस प्रकार उल्लेखित किया है-

रूखां उपर मरण धरयो, कीजे क्यूं करणी किया।
जीव काजै प्राण दीन्है, कीयो गुरु फरमाइयो।

बिश्नोई पंथ में वृक्षों की रक्षा हेतु प्राणोत्सर्ग की यह प्रथम घटना थी। इसके पश्चात् तो वन्य जीव रक्षा शहादत की परम्परा अविराम रही। जोधपुर के राजा अभय सिंह के समय खेजड़ली ग्राम में 363 स्त्री-पुरुषों ने अपने प्राणों की बलिदान देकर खेजड़ी के वृक्षों की रक्षा की। इस बलिदान तथा जीवों के प्रेम को याद करने के लिए उस स्थान पर प्रतिवर्ष मेले का आयोजन किया जाता है।

बिश्नोई सम्प्रदाय के प्रवर्तक संत यह जानते थे कि समुदाय का जीवन बिना पर्यावरण के अधूरा है। पर्यावरण के सही प्रकार से रहने पर ही मानव अपने जीवन का सर्वांगीण विकास करने में सक्षम है। इसलिए उन्होंने पर्यावरण की रक्षा को धर्म की आस्था के साथ जोड़कर मानव समाज को एक महत्वपूर्ण एवं नई सामाजिक एवं धार्मिक व्यवस्था का निर्माण किया। पर्यावरण रक्षा एवं संरक्षण की इस अवधारणा के पीछे गुरुजी का विचार यह था कि मानव जीवन और प्रकृति में परस्पर सामंजस्य एवं संतुलन बना रहे। शायद यही कारण रहा कि इस सम्प्रदाय के नियमों को बनाते समय गुरुजी ने मानव समाज की आवश्यकता, स्वभाव एवं मनुष्य की प्रकृति तथा पर्यावरण का मानव के साथ संबंध को विश्लेषण करके नियमों को उपनिबद्ध किया। उनकी इस वैकल्पिक सोच का ही परिणाम था कि वह आज से 500 वर्ष पूर्व ही आज के समय में उत्पन्न होने वाले पर्यावरणीय संकटों यथा- ग्लोबल वार्मिंग, बढ़ता जल, वायु, मृदा प्रदूषण, जल संकट, मृदा अपरदन जैसी संकटों की आहट को भाँप गये तथा उसके परिमार्जन के लिए उस समय ही कुछ ऐसे नियमों का विधान अपने शिष्यों के लिए कर गये कि आने वाले समय में वे इन समस्याओं से दो चार न होना पड़े।

बिश्नोई धर्म की जीवन पद्धति, व्यवहार एवं

स्वभाव में प्रकृति रक्षा एक विशिष्ट कर्म है। यहीं कारण है कि यह सम्प्रदाय न केवल भारत के अपितु सम्पूर्ण विश्व में अपने पर्यावरणीय विचारों तथा उसको अपने जीवन में अपनाने के कारण ख्याति लब्ध है।

गुरु जम्भेश्वर जी के पर्यावरणीय सिद्धान्तों का पालन करते हुए उनकी धार्मिक मान्यताओं में विश्वास रखते हुए उनके अनुयायियों ने वृक्षों तथा जीवों को अपने प्राणों से भी प्रिय माना है। उनकी धार्मिक मान्यताओं में विश्वास, आस्था और निष्ठा रखते हुए प्रकृति रक्षा को अपने जीवन का हिस्सा मानते हैं। उनकी दृष्टि में पर्यावरण केवल जीव शास्त्रियों का विषय नहीं है बल्कि उनके जीवन का आध्यात्मिक अंग है। वास्तव में देखा जाए तो धर्म और दर्शन तथा ज्ञान विज्ञान का परस्पर सम्बंध होता है। दोनों अगर साथ-साथ होती मानव जीवन का गुणोत्तर विकास सम्भव हो सकता है। यदि दोनों के मध्य संतुलन का अभाव है तो विज्ञान अनेक प्रकार के संकट का घर हो जाता है। दिनकर कहते हैं कि-

सावधान, मनुष्य! यदि विज्ञान है तलवार,
तो इसे दे फेंक, तज कर मोह, स्मृति के पार।
हो चुका है सिद्ध, है तू शिशु अभी नादान,
फूल-काँटों की तुझे कुछ भी नहीं पहचान।
खेल सकता तू नहीं ले हाथ में तलवार,
काट लेगा अंग, तीखी है बड़ी यह धार।

बिश्नोई समाज के लोग पर्यावरण संरक्षण को धर्म के रूप में स्वीकार करते हैं। धर्म एक आत्मानुशासन का विषय है। जिसमें नैतिकता और मानवता की भावना विकसित होती है। नैतिकता और मानवता से ही सत्य, अहिंसा, प्रेम, शान्ति, सच्चाई, न्यायशीलता के गुणों का विकास होता है। जहाँ इन मूल्यों का विकास होता है वहाँ प्रकृति की रक्षा स्वत: हो जाती है। इसलिए बिश्नोई धर्म के लोगों का प्रकृति से भावनात्मक लगाव है। यही कारण है कि ये लोग पेड़-पौधों तथा जीवों की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान भी देते आये हैं।

पर्यावरण संरक्षण एवं जाम्भोजी: प्रकृति के विविध आयाम हैं। प्रकृति ने इन आयामों की रचना पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से ही की है। इन आयामों में एक प्राकृतिक संतुलन है। इस संतुलन के द्वारा ही धरती पर प्रत्येक प्राणी जीवित रह सकता है और अपना यथोचित विकास कर सकता है। इस संतुलन को बिगाड़ने का अधिकार किसी को नहीं दिया है। इतना होने पर भी यदि कोई वर्ग इस संतुलन को बिगाड़ने का प्रयास करता है तो उसके स्वयं की एवं साथ ही अन्य वर्गों को भी हानि पहुँचती है।

यद्यपि जाम्भोजी के समय में पर्यावरणीय असंतुलन की समस्या नहीं थी फिर भी उन्होंने इस बात का अनुभव किया कि मानव के विकास एवं उसके अस्तित्व के लिए प्रकृति के विभिन्न आयामों में संतुलन रहना आवश्यक है। प्रकृति के तीन प्रमुख घटक हैं- मानव, वनस्पति, मानवेतर प्राणी। इसमें मानव अपनी रक्षा में स्वयं समर्थवान है और शेष दोनों की रक्षा भी मानव की इच्छा पर निर्भर है। इन सभी तथ्यों को समझकर गुरु जाम्भोजी ने अपने शिष्यों को पर्यावरण संरक्षण हेतु जो मूल मंत्र दिया वह है-

जीव दया पालणी, अर रूंख लीलो नहिं घावै।

अर्थात् समस्त जीवों पर दया करनी है तथा हरे वृक्ष मत काटो। सबदवाणी में भी हिंसा के विरोध में अनेक तर्क देकर जीव दया का समर्थन किया था। पृथ्वी पर जीवन का सामान्य सिद्धान्त यह है कि प्रत्येक प्राणी दूसरे प्राणी के विकास में सहायक है। यदि किसी का जीवन संकट में है तो बाकी पर भी इसका उतना ही प्रभाव पड़ता है।

ईंधन के साथ जीवों को जलाने से हिंसा भी होती है और प्रदूषण भी फैलता है। इसलिए जाम्भोजी ने ईंधन को भी अच्छी तरह झाड़ कर प्रयोग में लेने को कहा। ऐसा कहने का उनका उद्देश्य जीव हत्या और प्रदूषण को रोकना था। जाम्भोजी ने अपने शिष्यों को मृतकों को जलाने की अपेक्षा गाड़ने की शिक्षा दी। इसका पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से महत्वपूर्ण योगदान है। मृतकों को जलाने के लिए लकड़ी काटने की आवश्यकता पड़ेगी। इससे पर्यावरण को अपार क्षति पहुंचेगी। मृतक को जलाने के लिए लकड़ी के साथ ही साथ पर्याप्त मात्रा में

घी, खोपरा एवं अन्य सुगंधित पदार्थ भी चाहिए होंगे जो हर व्यक्ति के लिए सम्भव नहीं हो सकते। इस प्रकार उनके द्वारा अपनाया गया मृतक संस्कार की यह विधि न केवल पर्यावरण अनुकूल है बल्कि लोगों की आर्थिक अक्षमता का भी ध्यान रखता है।

इसके अतिरिक्त गुरु जाम्भोजी ने होम करने पर पर्याप्त बल दिया। होम पर्यावरण शुद्धि में सहायक होता है। होम की अग्नि जब पर्यावरण में जाती है तो इससे पर्यावरण में व्याप्त अनेक प्रकार के रोगाणु जीव-जंतुओं का नाश होता है। जिससे कई प्रकार के बीमारियों से लोगों की रक्षा होती है। साथ ही साथ होम वर्षा में भी सहायक है। इसकी पुष्टि तो वैज्ञानिक भी करते हैं। एक अन्य लाभ यह है कि इससे पर्यावरण में उपस्थिति दुर्गन्ध तथा गंदी वायु दोनों शुद्ध हो जाते हैं।

होम हित चित प्रीत सूं होय बास बैकूण्ठ पावों।

निष्कर्ष:

गुरु जाम्भोजी ने अपने सम्पूर्ण जीवन में जो शिक्षा अपने शिष्यों को दी उसका सार यही है कि प्राणी मात्र की रक्षा से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। बिश्नोई सम्प्रदाय में प्राणी मात्र की सेवा धर्म का इतना विश्व में प्रसार है कि विश्व के अधिकांशत: देशों में इनका नाम एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। वस्तुत: देखा जाए तो भारत में अनेकों ऐसे संत महात्मा हुए जिनके उपदेशों को धर्म का रूप दे दिया गया तथा उनके लाखों प्रचारक तथा अनुयायी हैं। मगर उन संतों में से किसी ने भी कभी पर्यावरण संचेतना को जनमानस के मध्य लाने का प्रयास नहीं किया।

गुरु जाम्भोजी ने धर्म को पर्यावरण से अलग देखकर पर्यावरण को ही धर्म के पर्याय के रूप में प्रस्तुत किया। उनका मानना था कि धर्म और पर्यावरण एक-दूसरे के पूरक हैं। प्राणी मात्र की रक्षा करना तथा वृक्षों को भाई-बन्धु के समय सेवा करना चाहिए।

हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों ने जिस प्रकार हमारे जीवन को पर्यावरण के साथ अभिन्न रूप में देखा तथा हमारे सभी रीति-रीवाज, तीर्थ, पूजा-पाठ तथा त्यौहारों का प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित किया। 16वीं शताब्दी में वही कार्य पुन: गुरु जाम्भोजी ने किया। उनके द्वारा किए गये पर्यावरण संरक्षण के कार्यों को न केवल उनके शिष्यों ने अपने जीवन में उतारा बल्कि उसको आज भी प्राण प्रण से पूरित करते चले आ रहे हैं। आज भी बिश्नोई समाज के घरों के आस-पास विभिन्न प्रकार के जीव-जंतु, नीलगाय, हिरण, चिंकारा, मृग आदि बिना किसी भय के विचरण करते आपको नजर आएंगे। सलमान खान चिंकारा मामले को जिस तरह बिश्नोई समाज ने आगे बढ़ाया, जबकि यह पूरा मामला एक सुपर स्टार का था, जिसको संरक्षण सरकार, अधिकारी सबका प्राप्त था। तब भी अपना सब कुछ दांव पर रखकर उन्होंने सलमान खान को दोषी सिद्ध करने का प्रयास करवाया है। यह उनके आज भी जीव प्रेम को दर्शाता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. अमर ज्योति पत्रिका विशेषांक, जून 2014
2. वील्होजी की वाणी, डॉ. कृष्ण लाल बिश्नोई
3. https://hi.m.wikipedia.org › wiki
4. गुरु जम्भेश्वर-विकिपीडिया
5. bishnoiyuva.com ›
6. वील्होजी की वाणी, बिश्नोई युवा संगठन
7. https://www.civilhindipedia.com ›
8. भारत के पर्यावरण आंदोलन (2) - बिश्नोई
9. www.bishnoism.com ›
10. बिश्नोई समाज और पर्यावरण संरक्षण
11. www.sahisamay.com › Blogging
12. खेजड़ली आन्दोलन: The First Chipko Movement in Hindi
13. अमर ज्योति, जम्भेश्वर जी महाराज: पर्यावरण संरक्षण
14. अमर ज्योति, जम्भेश्वर जी महाराज: pdf files-Blogger.com
15. बिश्नोई सन्देश

-विपुल शिवसागर

(शोधार्थी) संस्कृत विभाग,

एन.ए.एस. कॉलेज, मेरठ (यूपी)

पर्यावरण सुरक्षा: हमारा कर्त्तव्य और दायित्व

जीव के जीवन या विकास को प्रभावित करने वाली सभी परिस्थितियों का योग पर्यावरण कहलाता है। जीव व पर्यावरण के बीच परस्पर गहन सम्बन्ध होता है। ये आपस में प्रतिक्रिया करते हैं तथा एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। मूल रूप से पर्यावरण के दो भाव होते हैं।

जैविक पर्यावरण: यह सजीव वस्तुओं से बना होता है। जैसे पेड़-पौधे, प्राणी व जीवाणु।

अजैविक पर्यावरण : यह निर्जीव वस्तुओं से बनता है। जैसे- हवा, पानी, भूमि, तापमान, प्रकाश व वर्ष।

मानव व प्रकृति का अटूट संबंध है। प्रकृति मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति का एकमात्र साधन है। प्रकृति मनुष्य की सहचरी है और दोनों एक दूसरे के पूरक, संरक्षक और पोषक हैं। जनसंख्या का विस्फोट आवास, उद्योगों और कृषि के लिए अतिरिक्त भूमि की आवश्यकता के कारण मनुष्य वनों की अंधाधुंध कटाई करने में लगा हुआ है। घास के मैदानों पर खेती की जा रही है जिससे बढ़ती हुई जनसंख्या को भोजन मिल सके। बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए आवासीय स्थिति भी एक महत्वपूर्ण कारण है जिसके कारण प्राकृतिक वनों का कटाव किया जा रहा है। नदियों पर बिजली बनाने के लिए बांध बनाए जा रहे हैं। जिससे आसपास के भू-भाग में बाढ़ का खतरा बना रहता है तथा कुछ प्रजातियां लुप्त होने की कगार पर हैं।

विकास की वस्तुओं के लिए प्रदूषण फैलाने वाले कारखानों का निर्माण किया जा रहा है। 'वायु प्रदूषण' से अस्थमा, फेफड़ों में सूजन, आंख तथा हृदय संबंधी रोग होते हैं। 'जल प्रदूषण' से हैजा, पीलिया तथा टाइफाइड जैसी घातक बीमारियां होती है। ध्वनि प्रदूषण से रक्तचाप बढ़ता है। हृदय रोग, घबराहट व बेचैनी बढ़ती है। सबसे अधिक घातक प्रभाव यह होता है कि हमारी सुनने की शक्ति कम हो जाती है। इतना ही नहीं प्रदूषित वातावरण से अनेक जीव-जन्तुओं की दुर्लभ प्रजातियां, अनेक जीवन रक्षक दुर्लभ वनस्पतियों की जातियां भी समाप्त होती जा रही हैं। घातक आण्विक परीक्षणों से उठने वाले धुंए तथा उसके विषैले प्रभावों से जीवन रक्षक ओजोन परत के फटने का संकट आज हमारे दरवाजे पर दस्तक दे रहा है। परिणामस्वरूप धरती का पर्यावरण विषाक्त हो जाएगा। यदि इसी तरह पर्यावरण प्रदूषित होता रहा तो धरती का जीवन ही संकट में पड़ जाएगा और आने वाली पीढ़ी का अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा।

इस विश्व को त्वरित बनाने में वाहनों का अत्यधिक योगदान रहा है किन्तु इस विकास को यदि हम पर्यावरण की दृष्टि से देखें तो हम पाएंगे कि हमने अपने लिए अनेक समस्याएं खड़ी कर ली हैं। सभी वाहन किसी न किसी ईंधन से चलते हैं, जिनके जलने से वातावरण में प्रदूषण फैलता है। रासायनिक खादों तथा कीटनाशकों के अधिकाधिक प्रयोग से हमारे खेतों की उपज कई गुणा बढ़ गई है और आज हम इस स्थिति में हैं कि कृषि उत्पादों का निर्यात कर रहे हैं। किंतु रासायनिक खादों व कीटनाशकों का प्रयोग करके हमने अपने जल, वायु व मिट्टी को प्रदूषित कर लिया है। वे रसायन हमारी खाद्य श्रृंखला में प्रवेश करके मनुष्यों व अन्य जीवों में असाधारणतया पैदा करते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि अपनी गतिविधियों के द्वारा हम पर्यावरण को अत्यधिक हानि पहुंचा रहे हैं। यदि हमें अपना अस्तित्व बनाए रखना है तो पर्यावरण के प्रति जागरूक होना ही पड़ेगा। भारत में राष्ट्रीय स्तर पर अनेक कदम उठाए गए हैं तथा पर्यावरण की सुरक्षा हेतु नियम भी बनाए गए हैं। स्टाकहोम के शिखर सम्मेलन के बाद पांच वर्षों में ही भारत ने संविधान में संशोधन करके पर्यावरण सुरक्षा को एक संवैधानिक कर्त्तव्य घोषित कर दिया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण को सुरक्षित रखने के प्रयास किए जा रहे हैं। यदि हम ईमानदारी से पर्यावरण को सुरक्षित रखने का प्रयास करें तो धरती निश्चित रूप से जीवन के लिए उत्तम स्थान बन जाएगी।

प्रकृति का विनाश स्वयं हमारा ही विनाश है। जीवन का विनाश है। इसलिए पर्यावरण की प्रतिक्रियाओं को समझना हमारा कर्त्तव्य है ताकि प्रकृति की रक्षा की जा सके।

धरती जो उगलती थी सोना, जिसकी थी बड़ी शान।
उसी धरती को प्रदूषण ने कर दिया वीरान॥

-अमरदीप सिंह सीगड़
गांव लीलस, भिवानी
मो. 9991940029

जन्माष्टमी महोत्सव हिसार : एक झलक

हिसार: बिश्नोई समाज एक उत्सव धर्मी समाज है। इस समाज में वर्ष भर में अनेक मेले एवं त्यौहार अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ मनाये जाते हैं। परन्तु जन्माष्टमी महोत्सव की बात ही कुछ अलग है। देशभर में बिश्नोइयों द्वारा भगवान श्रीकृष्ण और भगवान जम्भेश्वर जी का यह अवतार दिवस विशेष उत्साह से मनाया जाता है। परन्तु बिश्नोई मन्दिर, हिसार में जन्माष्टमी के उत्सव पर आयोजित होने वाले कार्यक्रम की शोभा अलग ही होती है। गत कई वर्षों की भांति इस वर्ष भी बिश्नोई मन्दिर, हिसार में जन्माष्टमी महापर्व 24 अगस्त, 2019 को अत्यन्त धूमधाम व उत्साह से मनाया गया। महीने भर पहले ही इस उत्सव की तैयारियां प्रारम्भ हो चुकी थी। मन्दिर में जहां रंग रोगन व सजावट का कार्य चल रहा था वहीं सभा के पदाधिकारी गाँव-गाँव जाकर इस महापर्व का निमन्त्रण दे रहे थे। 23 अगस्त तक सभी तैयारियां अपने चरम पर थी और मन्दिर प्रांगण जन्माष्टमी महापर्व का साक्षी बनने के लिए सज धज कर तैयार था। सेवकों का आगमन और मेहमानों का स्वागत एक रमणीय वातावरण की सृजना कर रहा था। 24 अगस्त को प्रात: स्वामी रामानन्द जी आचार्य, मुकाम के सान्निध्य में विशाल यज्ञ व पाहल का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। यज्ञ पश्चात् सभा प्रधान श्री प्रदीप बैनीवाल के नेतृत्व में ध्वज गान के साथ ध्वजारोहण किया गया। ठीक प्रात: 10 बजे मुख्य कार्यक्रम के लिए मंच तैयार था। मेहमानों का आगमन व मंच संचालक डॉ. सुरेन्द्र कुमार द्वारा उनका स्वागत कार्यक्रम को जीवन्तता प्रदान कर रहा था। 11 बजे कार्यक्रम के अध्यक्ष चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई, संरक्षक अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा व मुख्य अतिथि श्री राजकुमार सिंह, संपादक दैनिक ट्रिब्यून व अन्य अतिथियों ने मन्दिर में पदार्पण किया, जहां सभा प्रधान के नेतृत्व में उनका जोरदार स्वागत हुआ। अतिथियों ने यज्ञ में आहुति देकर पाहल ग्रहण कर, ज्योति के दर्शन करके मंच पर पधारे जहां उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने उनका अभिवादन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ गुरु जम्भेश्वर स्कूल आदमपुर की छात्राओं के 'तारणहार थलासिर आयो' की हजूरी साखी गायन के साथ हुआ। तत्पश्चात् सभा प्रधान श्री प्रदीप बैनीवाल ने आए हुए सभी

समारोह में मंचासीन अतिथिगण।

मुख्य अतिथि श्री राजकुमार सिंह को सम्मानित करते चौ. कुलदीप बिश्नोई, प्रदीप बैनीवाल तथा अन्य अतिथिगण

अतिथियों व महानुभावों का हार्दिक स्वागत करते हुए बिश्नोई सभा, हिसार की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। श्री बैनीवाल ने कहा कि आज बहुत ही खुशी का अवसर है क्योंकि इसी दिन भगवान श्री जम्भेश्वर जी और भगवान श्री कृष्ण जी ने अवतार लेकर इस धरा-धाम को पवित्र किया था। आपने कहा कि बिश्नोई सभा हिसार सदैव समाज की सेवा में तत्पर रहती है। सभा का आगे भी यह प्रयास रहेगा कि समाज की चहुंमुखी उन्नति में अपना सर्वस्व योगदान दे।

अखिल भारतीय गुरु जम्भेश्वर सेवक दल के नवनियुक्त राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सहदेव कालीराणा ने सेवकदल की अन्न-धन से मदद करने के लिए समाज का आभार व्यक्त किया। आपने मृत्युभोज को सीमित करने का आह्वान किया तथा समाज में नशे की बढ़ती प्रवृत्ति पर चिंता प्रकट की। श्री रणधीर पनिहार ने गुरु जम्भेश्वर भगवान की शिक्षाओं को सभी के लिए कल्याणकारी बताते हुए उन्हें अपनाने पर जोर दिया।

पूर्व संसदीय सचिव श्री दूड़ाराम जी ने सामाजिक एकता व संगठन पर बल देते हुए कहा कि कलयुग में

संगठन ही एकमात्र शक्ति है। आज वही समाज उन्नति कर सकता है जो संगठित है और राजनीतिक रूप से मजबूत है। पूर्व सांसद पं. रामजीलाल ने इस अवसर पर बिश्नोई रत्न चौ. भजनलाल जी का स्मरण करते हुए बिश्नोई समाज को दिए उनके योगदान पर प्रकाश डाला। विशिष्ट अतिथि श्री दिनेश बिश्नोई आई.आर.एस. ने कहा कि शिक्षा किसी भी समाज की उन्नति का आधार है और शिक्षा के साथ संस्कार भी जरूरी हैं। एडवोकेट बनवारी लाल ईशरवाल ने गुरु जम्भेश्वर जी का भजन गाकर सभी को मंत्र मुग्ध कर दिया। श्री बिहारी लाल बिश्नोई, विधायक नोखा ने कहा कि समाज का बड़ा गौरवमयी इतिहास है। समाज के प्रवर्तक गुरु जम्भेश्वर महाराज ने अंधकार के युग में दुनिया को अपनी शिक्षाओं का प्रकाश देकर जीना सिखाया।

समारोह को मुक्तिधाम मुकाम के पीठाधीश्वर स्वामी रामानन्द जी आचार्य ने भी सम्बोधित किया। आचार्य श्री ने अपने सम्बोधन में गुरु जम्भेश्वर भगवान की समकालीन परिस्थितियों और उनके अवतार के उद्देश्य पर विस्तार से प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि श्री राजकुमार सिंह ने अपने उद्‌बोधन में जन्माष्टमी को एक विशिष्ट दिन बताते हुए कहा कि यह हमारे लिए संकल्प का दिन है। आज पूरा विश्व पर्यावरण की समस्या से जूझ रहा है। गुरु जम्भेश्वर जी ने 500 वर्ष पहले ही इस खतरे को भांप लिया था। इसलिए उन्होंने अपनी आचार-संहिता में अनेक ऐसे नियम बनाए जिनसे पर्यावरण की रक्षा होती है। आपने समाज में बढ़ती नशे की प्रवृति पर चिन्ता प्रकट की व युवाओं से आह्‌वान किया कि वे बुराइयों से बचकर शिक्षा का मार्ग अपनाएं। इसके बाद कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री कुलदीप बिश्नोई ने समाज के लोगों से अपील की कि वे गुरु जम्भश्वेर महाराज के दिखाए रास्ते व नियमों पर चलें। उनकी शिक्षाओं व उपदेशों को अपने जीवन में उतारकर एक स्वच्छ समाज का निर्माण करने में अपना योगदान दें। उन्होंने कहा कि जब तक हम सब मिलकर गुरु जी की शिक्षाओं को आगे नहीं ले जाएंगे तब तक समाज उन्नति नहीं कर सकता।

इस अवसर पर पूर्व विधायिका व विशिष्ट अतिथि श्रीमती जसमां देवी, बिश्नोई सभा, हिसार के कोषाध्यक्ष श्री अनिल पूनिया, सचिव श्री कुलदीप देहडू, उपप्रधान श्री कृष्ण खिचड़, श्री रामकुमार जाणी, सहसचिव श्री विकास फुरसाणी, कार्यकारिणी सदस्य श्री अमर सिंह मांजू, श्री ओमप्रकाश कड़वासरा, श्रीमती प्रोमिला भांभू, श्री प्रह्लाद खिचड़, श्री विजय सीगड़, पूर्व प्रधान श्री सुभाष देहडू, कर्मचारी कल्याण समिति के प्रधान श्री निहाल सिंह गोदारा; बिश्नोई महासभा शाखा भिवानी के प्रधान श्री विजय कुमार देहडू, श्री भूपसिंह गोदारा, प्रधान, बिश्नोई सभा, फतेहाबाद; सेवक दल शाखा फतेहाबाद के प्रधान श्री हंसराज गोदारा, श्री रामस्वरूप बैनीवाल, प्रधान, बिश्नोई सभा, रतिया; श्री अचिंतराम गोदारा, प्रधान बिश्नोई सभा पंचकूला, श्री हनुमान सिंह गोदारा प्रधान गुरु जम्भेश्वर संस्थान भवन दिल्ली, कामरेड बनवारी लाल, श्री अजमेर गोदारा व श्री प्रवीण धारणियां सहित समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। समारोह में समाज सेवा, शिक्षा व खेल के क्षेत्र में समाज का नाम रोशन करने वाले महानुभावों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सभा द्वारा विशाल भण्डारे का आयोजन किया गया।

सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन

23 अगस्त, 2019 की सायं को मंदिर परिसर में सर्व धर्म का सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ.जगबीर सिंह, अध्यक्ष हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी ने कहा कि खुदा की बनाई इस कायनात में इंसानियत ही सबसे बड़ा धर्म है। लेकिन इंसानों ने अपने स्वहितों के चलते इसके कई रूप बना दिए जो तर्कसंगत व मानवता के हित में नहीं हैं। सम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी रामानन्द जी आचार्य ने कहा कि गुरु जंभेश्वर भगवान ने बिश्नोई धर्म में सभी पंथों के लोगों को शामिल कर एक नव मानव धर्म की स्थापना की थी। उनके बताए नियमों पर अगर मानव जाति चले तो दुनिया में निश्चित तौर पर प्रेम व सामंजस्य की भावना

सर्वधर्म सम्मेलन में मंचासीन उपस्थित सभी धर्मों के प्रतिनिधि।

विकसित होगी। सम्मेलन में सनातन धर्म प्रतिनिधि श्री देव शर्मा, मुस्लिम धर्म प्रतिनिधि मोहम्मद समीर हाशमी, सिख धर्म प्रतिनिधि भाई कुलदीप सिंह, जैन धर्म प्रतिनिधि शासन साध्वी सुमन जी, ब्रह्मकुमारी बी.के. वन्दना बहन जी, बिश्नोई धर्म प्रतिनिधि स्वामी सच्चिदानंद आचार्य तथा आर्य समाज प्रतिनिधि स्वामी सच्चिदानंद जी सरस्वती, बौद्ध धर्म प्रतिनिधि डॉ. दलबीर सिंह भारती ने भी अपने विचार रखे। सभा प्रधान प्रदीप बैनीवाल ने सभी का स्वागत किया व संयोजक निहाल सिंह गोदारा ने सभी का धन्यवाद किया।

युवा एवं पर्यावरण सम्मेलन

युवा एवं पर्यावरण सम्मेलन में उपस्थित अतिथिगण।

24 अगस्त, 2019 को सायं 3 बजे युवा एवं पर्यावरण सम्मेलन आयोजित किया गया। जिसमें श्री भव्य बिश्नोई, सदस्य अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। इस सम्मेलन की अध्यक्षता स्वामी सहजानंद जी संस्थापक मिशन ग्रीन फाउंडेशन, हिसार ने की। श्री श्याम सुन्दर बिश्नोई (आर.जे.एस.) कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। श्री भव्य बिश्नोई ने युवाओं से आह्वान किया कि समाज की प्रगति का भार उनके कंधों पर है इसलिए वे अपनी जिम्मेवारी समझकर समाजहित के कार्य करें। स्वामी सहजानंद जी ने बिगड़ते पर्यावरण पर विस्तार से प्रकश डाला। श्री श्याम सुन्दर बिश्नोई ने युवाओं से शिक्षा के प्रति विशेष ध्यान देने का आह्वान किया। इस कार्यक्रम में अतिथियों का स्वागत सहसचिव श्री विकास फुरसाणी ने व मंच संचालन श्री प्रदीप मांजू ने किया।

झांकी दर्शन

24 अगस्त को ही सायं 7 बजे गुरु जम्भेश्वर स्कूल, हिसार के विद्यार्थियों द्वारा भगवान श्री कृष्ण और

जन्माष्टमी महोत्सव पर झांकी प्रस्तुत करते बच्चे।

भगवान श्री जम्भेश्वर की लीलाओं से संबंधित झांकियाँ लगाई गई जिन्होंने आगन्तुकों को विशेष रूप से आकर्षित किया।

रात्रि जागरण

जन्माष्टमी की रात्रि को गायक कलाकार श्री रिछपाल दड़क, श्री रामकुमार भादू, पुजारी दीपचन्द व अन्य कलाकारों द्वारा गुरु महाराज का भव्य जागरण लगाया गया। जागरण में हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लेकर जीवन सार्थक किया। अर्द्धरात्रि को श्री कृष्ण एवं श्री जम्भ जन्मोत्सव मनाया गया।

उपस्थित श्रद्धालुगण।

समापन बैठक

25 अगस्त, 2019 को प्रात: गायणाचार्यों द्वारा विराट यज्ञ किया गया। तत्पश्चात् समापन बैठक आयोजित हुई जिसमें सभा प्रधान श्री प्रदीप बैनीवाल व सेवकदल अध्यक्ष सहदेव कालीराणा द्वारा कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सेवक दल व अन्य संस्थाओं का आभार प्रकट किया गया।

-कुलदीप देहडू
सचिव, बिश्नोई सभा, हिसार

कांठ में हर्षोल्लास से मनाया गुरु जम्भेश्वर जी का जन्मोत्सव

कांठः भगवान श्री गुरु जम्भेश्वर का 569वां जन्मोत्सव कांठ में हर्षोल्लास से मनाया गया। सात दिवसीय श्री हरिकथा ज्ञानामृत वर्षा का शुभारम्भ वेदों के मन्त्रोच्चारण, सबदवाणी व यज्ञ के साथ हुआ जिसमें अनेक श्रद्धालुओं ने भाग लिया। समारोह में गुरुओं व संतों के आदर्शों पर चलने का आह्वान किया गया।

कांठ नगर में विशनपुरा मौहल्ला में स्थित ट्रस्ट श्री जम्भेश्वर जी महाराज विराजमान मंदिर परिसर में भगवान जम्भेश्वर के जन्मोत्सव पर चल रही सात दिवसीय हरिकथा में देवभूमि हरिद्वार से पधारे श्रद्धेय कथावाचक स्वामी राजेन्द्रानन्द जी ने सात दिनों तक ज्ञान अमृत की वर्षा से सुनने वालों को सराबोर किया।

शनिवार की सुबह बिश्नोई संतों ने मन्त्रोच्चारण के साथ यज्ञ सफल कराया। मन्दिर में स्वामी जी के कर-कमलों द्वारा ध्वजारोहण किया गया। जिसमें क्षेत्र व दूर दराज से आए श्रद्धालुओं ने भाग लिया। दोपहर को विचार गोष्ठी व मुख्य समारोह में हरियाणा के राज्य सूचना आयुक्त श्री जयसिंह बिश्नोई ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लेकर दीप प्रज्ज्वलित किया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि गुरु जम्भेश्वर जी ने साढ़े पांच सौ साल पहले ही पर्यावरण को लेकर चिन्ता व्यक्त की थी।

उनके द्वारा बनाए गए 29 नियमों का पालन करना चाहिए। विशिष्ट अतिथि के रूप में देहरादून के अपर न्यायाधीश श्री धर्म सिंह बिश्नोई, उत्तराखण्ड के मुख्य सुरक्षा अधिकारी श्री संजय कुमार बिश्नोई, भा.कि.यू. के वरिष्ठ मण्डल उपाध्यक्ष चौ. ऋषिपाल सिंह, गन्ना समिति के चेयरमैन चौ. विजयपाल सिंह ने भी विचार व्यक्ति किए।

अध्यक्षता कर रहे बिश्नोई सन्त स्वामी कृष्णानन्द जी आचार्य ने ज्ञान बांटते हुए गो सेवा की अपील की। कार्यक्रम आयोजक व ट्रस्ट के अध्यक्ष विख्यात बिश्नोई संत स्वामी राजेन्द्रानन्द जी महाराज ने सभी

जन्माष्टमी महोत्सव पर हरिकथा वाचन करते स्वामी राजेन्द्रानंद जी।

जन्माष्टमी महोत्सव पर हरिकथा सुनते श्रद्धालुगण।

को आशीर्वाद दिया। ट्रस्ट के महामंत्री मास्टर सी.पी. सिंह जी ने सभी का आभार प्रकट किया। संचालन मास्टर राजवीर बिश्नोई ने किया।

कार्यक्रम में स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी अमृतानंद जी, ऋषिदानंद जी, स्वामी मुक्तानंद जी, स्वामी शरणानंद जी, स्वामी विश्वात्मानंद जी आदि सहित भारी संख्या में बिश्नोई समाज के महिला पुरुषों और बच्चों ने भाग लिया।

समाज के मेधावी छात्र/छात्राओं, पहलवानों व अन्य उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वालों को, पत्रकारों को, कथा सहयोगियों को तथा अतिथियों को सम्मानित किया गया, जिसमें इंस्पेक्टर दिलावार सिंह, सी.ओ. साहब महेन्द्र सिंह, कुंवर सुरेन्द्र सिंह, देवराज सिंह, कल्लू सिंह, करमवीर सिंह, डॉ. ओमराज सिंह, प्रशान्त कुमार, रवि कुमार आदि उपस्थित थे।

-मास्टर राजवीर बिश्नोई
कांठ, मुरादाबाद

श्रद्धा व उल्लास से भरा खेजड़ली शहीदी मेला

खेजड़ली: पेड़ों को बचाने की खातिर अपने प्राणों की आहुति देने वाली मां अमृता देवी बिश्नोई सहित 363 बिश्नोई अमर बलिदानियों की याद में 8 सितंबर को जोधपुर के खेजड़ली गांव के शहीद स्मारक पर शहीदों के 289वें बलिदान दिवस पर अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा एवं खेजड़ली शहीदी पर्यावरण संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में विशाल मेला भरा गया। मेले की पूर्व संध्या पर विशाल भजन संध्या का आयोजन भी किया गया। मेले के दिन सवेरे श्री गुरु जंभेश्वर भगवान के 120 सबदों के साथ हवन व पाहल किया गया। तत्पश्चात अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा द्वारा ध्वजारोहण के साथ ही मेले का विधिवत शुभारंभ किया गया। मेले में विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, वही मेले में आसपास के क्षेत्रों से 36 कौम के प्रेमियों ने भाग लेकर शहीदों को नमन किया। मेले में सोने के आभूषणों से शोभित बिश्नोई समाज की महिलाएं आकर्षण का केंद्र रही, वही मेले को पर्यावरण सेवकों ने मेला परिसर में बिखरी पॉलीथिन की थैलियों को बीनने का काम भी किया। मेला परिसर में नवनिर्मित मंदिर भी आकर्षण का केंद्र रहा जो वर्तमान में पूर्णता की ओर अग्रसर है। मेला परिसर में पधारने वाले श्रद्धालुओं ने शहीद स्मारक पर शहीदों के नारे लगाते हुए उस मिट्टी को नमन करते हुए अपने ललाट पर तिलक लगाते हुए शहीदों को पुष्प अर्पित किए। तत्पश्चात साधु संतों के सान्निध्य में तथा राजस्थान सरकार के वन एवं पर्यावरण मंत्री सुखराम बिश्नोई के मुख्य आतिथ्य में धर्म सभा का आयोजन किया गया। धर्म सभा को संबोधित करते हुए वन एवं पर्यावरण मंत्री सुखराम बिश्नोई ने कहा कि खेजड़ली इतिहास विश्व का एकमात्र उदाहरण है और हम सभी मिलकर इसको ओर अधिक विकसित करने का प्रयास करेंगे। खेजड़ली शहीदी पर्यावरण संस्थान के अध्यक्ष एंव स्थानीय लुणी विधायक महेंद्र सिंह बिश्नोई ने मेला परिसर में एक ओर नया पंडाल बनाने व शहीदी स्मारक तथा मेला परिसर को और विकसित करने के लिए अपने विधायक और से पच्चीस लाख का सहयोग देने की घोषणा की। फलोदी विधायक पब्बा राम बिश्नोई ने बताया कि आज बिश्नोई समाज को माता 'अमृता देवी बिश्नोई' का के पद चिह्नों का अनुसरण करने की जरूरत है जिससे अन्य जातियों में

श्रद्धालुओं को संबोधित करते वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री सुखराम बिश्नोई।

पेड़-पौधे बचाने व पर्यावरण के प्रति समाज की जो एक अलग पहचान बनी है उसको बरकरार रखा जा सके। नोखा विधायक बिहारीलाल बिश्नोई ने अपने उद्बोधन में इस स्मारक को विश्व स्तर पर पहचान दिलाने के लिए ओर अधिक प्रयास करने का आह्वान किया, वही लोहावट विधायक किसना राम बिश्नोई ने कहा कि यह मेला बिश्नोई समाज नहीं संपूर्ण मानव जाति को एक संदेश देने वाला मेला है। हम सभी मिलकर इसको और अधिक अच्छे तरीके से विकसित करने और शहीदों की शहादत को यादगार बनाने का प्रयास करेंगे। अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष हीरालाल भंवाल ने मेला परिसर को और अधिक सुविधाएं विकसित करने हेतु महासभा की तरफ से हर सम्भव सहयोग का भरोसा दिलाया वही धर्म सभा को मुकाम पीठाधीश्वर स्वामी रामानंद महाराज, जाजीवाल धोरा के स्वामी भागीरथ दास आचार्य, रुड़कली के श्री महंत शिवदास, खेजड़ली संत शंकरदास, कांग्रेस के प्रदेश महासचिव वैभव गहलोत, अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष साहब राम रोज, राष्ट्रीय महासचिव मांगीलाल बुड़िया, राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री राम साहू प्रदेश अध्यक्ष बलदेवराम साहू संभाग अध्यक्ष, श्याम खीचड़ लोहावट प्रधान, भागीरथ बेनीवाल बिलाड़ा प्रधान, सुमित्रा बिश्नोई, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के अध्यक्ष रविन्द्र सिंह भाटी सहित अनेक जनप्रतिनिधियों ने संबोधित किया। मंच का संचालन प्रोफेसर जेताराम बिश्नोई ने किया। इस अवसर पर रामनिवास बुध नगर, सुखराम बोला,बी.आर. भादू, रि. भारतीय वन सेवा, भागीरथराय साहू, रामुराम

गोदारा जालेली, महेन्द्रसिंह धायल, कैलाश बेनिवाल, रामनिवास हांणियाँ सहित अनेकों जनप्रतिनिधि और सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित थे। समाज के लोगों ने मंदिर निर्माण हेतु भी अपना बढ़-चढ़कर सहयोग दिया। धर्म सभा के दौरान पर्यावरण के क्षेत्र में सराहनीय कार्य करने वाली कुछ प्रतिभाओं का सम्मान भी किया गया। साथ ही अभी सम्पन्न हुए छात्र संघ के चुनावों में जीतने वाले बिश्नोई छात्रों का सम्मान भी किया गया।

-रामस्वरूप बिश्नोई
व्यवस्थापक, जम्भज्योति

जाम्भा में हजारों श्रद्धालुओं ने सरोवर में लगाई डुबकी

जाम्भा: बिश्नोई समाज के आराध्य देव जम्भेश्वर भगवान की तपोस्थली भूमि धाम जांभोलाव में माधा मेला 14 सितंबर को भरा। जांभोलाव धाम सरोवर में श्रद्धालुओं ने स्नान कर पर्यावरण बचाने के लिए यज्ञ में आहुति दी। वही 120 शब्दवाणी से पवित्र पाहल बनाया। प्रभाती सूत फेरी निकाली। मेले में राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश सहित विभिन्न प्रांतों के बिश्नोई समुदाय के लोगों ने धोक लगाई। वहीं श्रद्धालुओं द्वारा पक्षियों के लिए बड़ी मात्रा में चुग्गा दान कर देश, समाज परिवार के लिए समृद्धि, सुख-शांति की कामना की। दोपहर मंदिर परिसर में धर्म सभा का आयोजन किया। इसमें मुकाम पीठाधीश्वर रामानंद आचार्य ने कहा कि 29 नियमों की नागरिकों को पालना चाहिए। 29 नियम से मानव जीवन का कल्याण हो सकता है। मेले में धर्मसभा आयोजित, समाज सुधार, पर्यावरण संरक्षण, नशा मुक्ति सहित विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई। मेला अध्यक्ष व बिश्नोई महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष हीराराम भंवाल ने कहा कि युवा वर्ग नशे की लत में अधिक जकड़ रहे हैं। इस पर माता-पिता ध्यान दे व नशे से बचें। विधायक पब्बाराम बिश्नोई ने समाज मे फैली व्यापक कुरीतियां मिटाने का आह्वान किया। विधायक किसनाराम बिश्नोई ने कहा कि शिक्षा बिना आज के युग में किसी तरह का रोजगार नहीं है। समाज की उन्नति के लिए सुसंस्कारित शिक्षण संस्थान खोली जाएं। लोहावट प्रधान भागीरथ बेनीवाल ने समाज को संगठित रहने की जरूरत है। विजय नोखड़ा ने कहा कि जांभा कमेटी के चुनाव करवाए जाएं। इस दौरान महंत भगवानदास, महंत प्रेमदास, शिवदास, रूपाराम कालीराणा, जिपस रावल जाणी, करनाराम खारा, नागौर नगर परिषद आयुक्त जोधाराम पूनिया, सेवक दल अध्यक्ष भंवरलाल खिलेरी, वकील व पूर्व सरपंच खेमराज तेतरवाल आदि मौजूद थे।

अंतरराष्ट्रीय पर्यावरणविद् खम्मूराम के नेतृत्व में पूरी पर्यावरण टीम पूरे दिन मेले में कचरा बीना व लोगों को पॉलीथिन मुक्त का संदेश दिया। दुकानदारों को शपथ पत्र भरकर संकल्प दिलवाया। मेला पूर्णतया पॉलीथिन मुक्त रहा। टीम में ओमप्रकाश कानासर, सामाजिक कार्यवक्ता भंवरी कालीराणा, रामचंद्र उदट, बिड़दाराम, बगडूराम, जगराम मांजू, मोहन डारा पुर, अरविंद हरीराम आदि सेवकों ने सक्रिय योगदान दिया। मेला परिसर में एक निवाला वाटसअप ग्रुप के एडमिन राजेश्वरी बिश्नोई व उनकी टीम के नेतृत्व में 1100 फलदार पौधे नि:शुल्क वितरण किए। इसमें रामनारायण खारा, हेतराम जैसला, रामदेव सजनाणी, मनीष कुमार व टीम के सदस्यों ने पौधे वितरण किए।

माधा मेले पर मंचासीन आचार्य रामानंद, प्रधान हीराराम भंवाल व रूपाराम कालीराणा।

माधा मेले पर हवन में आहुति देते भक्तगण।

-रामनिवास बिश्नोई
व्यवस्थापक, अमर ज्योति, हिसार

पीपासर में धूमधाम से मनाया गया भगवान का जन्मोत्सव

पीपासरः श्री गुरु जम्भेश्वर जन्मस्थली मंदिर सेवा समिति पीपासर के तत्वावधान में भगवान श्री गुरु जाम्भोजी का पावन जन्मोत्सव उनकी प्राकट्य भूमि पीपासर में धूमधाम से मनाया गया। भादों वदी अष्टमी की रात्रि को विशाल जागरण का आयोजन किया गया। भगवान की जन्म और बाल लीला से पवित्र हुई इस देवभूमि जिसके कण-कण को भगवान के श्रीचरणों को चूमने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। भगवान की चरणरज को मस्तक पर धारण करने और संतों, सुधीजनों और जाम्भाणी साखी भजन गायक कलाकारों के मुखारविंद से भगवान की अवतार लीलाओं सुनते हुए अर्द्धरात्रि को भगवान का जन्मोत्सव मनाने के लिए पहुंचे लगभग पांच हजार श्रद्धालुओं की उपस्थिति में जागरण लगाया गया। जिसमें मुकाम पीठाधीश्वर आचार्य रामानंद जी, समराथल महंत स्वामी रामाकिशन जी, पीपासर साथरी के महंत स्वामी भक्ति स्वरूप जी, स्वामी प्रेमदास जी, स्वामी विष्णु प्रकाश जी, स्वामी निर्मलदास जी आदि संतों की पावन सान्निध्य में गायक मास्टर सहीराम जी खिचड़, रामस्वरूप जी खिचड़, हनुमान जी धायल, रामेश्वरी देवी जम्भमंडल भीलवाड़ा ने अपने सुमधुर कंठ से गायन करके श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। चंद्रोदय पर शंखादि की ध्वनि से संपूर्ण क्षेत्र को गुंजायमान करते हुए भगवान के जन्म की खुशियां मनाई गई। जागरण में नोखा से विधायक बिहारीलाल जी भी पधारे। नवमी तिथि को सुबह जाम्भाणी परंपरा के अनुसार हवन करके पाहल बनाया गया।

-विनोद जम्भदास
हिम्मतपुरा, अबोहर, पंजाब

सक्ताखेड़ा में जाम्भोजी का 569वाँ अवतार दिवस मनाया

सक्ताखेड़ाः श्रीगुरु जम्भेश्वर मन्दिर सक्ताखेडा मे भगवान श्री जम्भेश्वर जी का 569वां जन्मदिवस बडी ही धूमधाम के साथ मनाया गया। 24 अगस्त की रात्रि को भगवान का जागरण श्री विष्णु सिवंर व श्री विजयपाल सिंवर के द्वारा लगाया गया। रात्री चन्द्रोदय के साथ ही कांसी की थाली बजाकर भगवान के अवतार का उत्सव बडी श्रद्धा के साथ मनाया।प्रातः यज्ञ का आयोजन हुआ। वयोवृद्ध पूर्व विधायक श्री सहीराम जी धारणिया के कर कमलों के द्वारा श्री विष्णु सिंवर ने पाहल बनाया।इस पावन अवसर पर हलवा का प्रसाद वितरित किया गया। श्री देवीलाल धारणिया, श्री रविन्द्र खिचड, श्री दीपा राम खिचड, श्री रमेश धारणिया व समस्त विश्नोई बन्धुजन इस अवसर पर मन्दिर प्रांगण मे उपस्थित थे।

मेहराणा धोरा में जन्माष्टमी मेला व जाम्भाणी साहित्य संगोष्ठी संपन्न

मेहराणा धोरा: भगवान श्री गुरु जाम्भोजी के पावन जन्मोत्सव पर परम श्रद्धेय ब्रह्मलीन स्वामी श्री ब्रह्मदासजी महाराज की तपोस्थली मेहराणा धोरा धाम पर आयोजित जाम्भाणी हरिकथा ज्ञानयज्ञ में समाज के युवा विद्वान जाम्भाणी साहित्य मर्मज्ञ आचार्य सच्चिदानंदजी लालासर साथरी ने छ: दिनों तक अपने प्रवचनों से श्रद्धालुओं को ज्ञान, भक्ति, कर्म का उपदेश दिया। अष्टमी की रात्रि में भगवान के जन्मोत्सव तक जागरण, नवमी को सुबह हवन-पाहल के साथ ही विशाल मेला भरना शुरू हो गया जो अनवरत रूप से शाम तक चलता रहा। मेले के दौरान अखिल भारतीय जम्भेश्वर सेवक दल ने रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया। सेवक दल के सचिव विष्णु थापन ने बताया की प्रतिवर्ष इस मेले पर ऐसे शिविर का आयोजन होता है धोरा पर यह छठा रक्तदान शिविर संपन्न हुआ है, जिसमें 200 यूनिट रक्तदान हुआ। लगभग पचास सेवकों ने इस शिविर में सेवा प्रदान करते हुए रक्तदाताओं के दूध और फलों की व्यवस्था की। रवि पूनिया ने रक्तदाताओं को पारितोषिक वितरण किए। इस अवसर पर सेवक दल के प्रधान राधेश्याम गोदारा, सुशील बैनीवाल, सुभाष थापन, नरेश नैण, इंद्र तरड़, निकेश पूनिया, मनोहर गोदारा, रवि खिचड़, शेखर तरड़, हंसराज ऐचरा, शिवदत्त सिंवर, संजू मंडा आदि सेवकों ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

24 अगस्त 2019, शनिवार को परम आदरणीय महंत स्वामी श्री मनोहरदासजी शास्त्री और कथावाचक युवा विद्वान आचार्य सच्चिदानंदजी और अन्य तपोमूर्ति संतों के सान्निध्य में जाम्भाणी साहित्य अकादमी बीकानेर और मेहराणा धोरा धाम के संयुक्त तत्वावधान में जाम्भाणी साहित्य संगोष्ठी का आयोजन किया गया। 'सबदवाणी: जीवन युक्ति और मुक्ति का ग्रंथ' विषय पर आयोजित इस संगोष्ठी के मुख्य अतिथि डॉ. अशोक सभरवाल (पूर्व विभागाध्यक्ष हिंदी) पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ ने अपने उद्बोधन में कहा कि गुरु जाम्भोजी का उपदेश जीवमात्र का कल्याण करने वाला है, उनके उपदेशों पर चलकर आज भयानक पर्यावरण प्रदूषण से ग्रस्त दुनिया को बचाया जा सकता है। चंडीगढ़ विश्वविद्यालय ने अब गुरु जाम्भोजी के दर्शन के अध्ययन-अध्यापन और शोध के लिए द्वार खोल दिए। उन्होंने कहा कि मेरा जन्म बिश्नोई समाज में नहीं हुआ फिर भी मैं गुरु जाम्भोजी की शिक्षाओं को आत्मसात करते हुए स्वयं को बिश्नोई मानता हूँ। संगोष्ठी में वरिष्ठ विद्वानों का स्वागत करते हुए मेहराणा धोरा धाम के महंत स्वामी मनोहरदास शास्त्री ने विद्वानों से आग्रह किया कि वे गुरु जाम्भोजी की पर्यावरणीय चेतना से युक्त वाणी पर शोध कार्य करें एवं और उसे स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में स्थान दिलवाएं ताकि विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया जा सके। मुख्य वक्ता विद्वान कथावाचक स्वामी सच्चिदानंद जी आचार्य, डॉ. बनवारीलाल सहू हनुमानगढ़ पूर्व प्राचार्य महिला कॉलेज एवं वरिष्ठ उपाध्यक्ष अकादमी, श्री सुरेन्द्र कुमार सहारण, डीन महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर एवं प्राचार्य ग्रामोत्थान बी.एड. कॉलेज संगरिया, डॉ. तरसेम शर्मा एसोसिएट प्रोफेसर डी.ए.वी. कॉलेज, अबोहर, डॉ. विनोद भादू (विभागाध्यक्ष हिंदी) भागसिंह खालसा कॉलेज, काला

टिब्बा, डॉ. चंद्रप्रकाश डी.ए.वी. कॉलेज गिदड़बाहा, एडवोकेट संदीप धारणियां रायसिंहनगर संगठन सचिव अकादमी, श्री अरविन्द गोदारा मैनेजर एक्सिस बैंक जयपुर, जयदेव डेलू शोधार्थी पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ ने अपने-अपने उद्‌बोधन में गुरु जाम्भोजी की शिक्षाओं पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम की अध्यक्षता बिश्नोई सभा पंजाब के पूर्व प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार गोदारा की। इस अवसर पर गुरु जाम्भोजी के दर्शन को अध्ययन-अध्यापन की मुख्य धारा में लाने के लिए पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ का अभिनंदन पत्र देकर धन्यवाद ज्ञापित किया गया। डॉ. चंद्रप्रकाश द्वारा पंजाबी में लिखित पुस्तक 'बिश्नोई समाज और सभ्याचार' का विमोचन, डॉ. मानव पूनियां द्वारा जाम्भाणी साहित्य ज्ञान परीक्षा में अव्वल रहे बच्चों को पारितोषिक वितरण और पर्यावरण के लिए काम करने वाले पर्यावरण मित्रों को सम्मानित किया गया। मंच संचालन इस संगोष्ठी के संयोजक विनोद जम्भदास कड़वासरा ने किया। इस अवसर पर संत समाज, अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक राहड़, सभा राष्ट्रीय संरक्षण रमेश बिश्नोई, सभा के पंजाब प्रांत अध्यक्ष आर.डी. बिश्नोई, सेवक दल के विष्णु थापन, सुशील बैनीवाल, सुभाष थापन, अकादमी सदस्य डॉ. विपलेश भादू, राजेंद्र डेलू, रामकुमार डेलू, विजय थापन, हेतराम सरपंच, देवीलाल गोदारा, मेहराणा धोरा सेवक राधेश्याम सिंवर, धर्म तरड़, विनोद सिहाग, ओम पूनिया, सुभाष धारणिया, हनुमान भाम्भू आदि गणमान्य लोग उपस्थित थे।

-नरेंद्र धारणियां
मेहराणा धोरा धाम (पंजाब)

मण्डी डवबाली में मनाया श्री जम्भ जन्माष्टमी महोत्सव

मण्डी डबवाली: हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी बिश्नोई धर्मशाला, डबवाली में श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का 569वाँ अवतार दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। धर्मशाला के पवित्र प्रांगण में श्री जम्भवाणी हरि कथा का आयोजन शुरू हुआ। आचार्य सुदेवानन्द जी धोरा जाजीवाल वालों ने सात दिन तक हरिकथा प्रवचन किया। सभा के अध्यक्ष श्रीकृष्ण लाल जी जाजुदा व कमेटी सदस्यों के तिलक लगाकर व फूल-मालाओं से भव्य स्वागत कर आशीर्वाद प्राप्त किया। कथा में गांवों से श्रोताओं की भीड़ दिन प्रतिदिन बढ़ती गई। आचार्य जी ने सात दिनों में सबदवाणी, 29 नियमों, नैतिक शिक्षा उमाबाई के भात की कथा सुनाई। हर वर्ष की भांति डबवाली शहर के मुख्य बाजार से शोभा यात्रा निकाली गई। शोभा यात्रा के मुख्य अतिथि श्री प्रवीण कुमार धारणीया अ.भा.बि. युवा संगठन को धर्मशाला पहुंचने पर फूल-मालाएं पहनाकर भव्य स्वागत किया गया। शोभा यात्रा धर्मशाला से शुरू होकर डबवाली के मुख्य बाजार, मलोट रोड, बठिण्डा चौक, चौटाला होते हुए वापिस धर्मशाला पहुंची। जिसका जगह-जगह भव्य स्वागत किया गया। कथा के अंतिम चरण में शहीद निहाल चंद जी धारणीया के पिता श्री हनुमान दास जी धारणीया, सांवतसर, राजस्थान से पधारे, जिनको स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। इसी दिन कार्यक्रम में चण्डीगढ़ से पंजाब यूनिवर्सिटी के हिन्दी

विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार सभ्रवाल ने पहुंच कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। उनका धर्मशाला में पहुंचने पर सभा के सदस्यों ने फूल-माला से भव्य स्वागत किया व शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया। 24 अगस्त को आचार्य जी द्वारा 120 सबदों द्वारा पाठ कर हवन किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय श्री गंगा बिशन भादू, सचिव; अ.भा. बिश्नोई महासभा, मुकाम एवम् अध्यक्ष बिश्नोई मंदिर, अबोहर का पधारने पर सभा द्वारा फूल-मालाओं व पुष्पवर्षा करके भव्य स्वागत किया। मुख्य अतिथि ने मंदिर में माथा टेक कर हवन में आहुति दी व पाहल ग्रहण कर मंदिर के शिखर पर गुरु जाम्भोजी का प्रतीक भगवां झण्डा लहराया। बच्चों द्वारा ध्वजगीत 'जम्भेश्वर का प्यारा झण्डा ऊँचा रहे हमारा' का गायन किया। मुख्य कार्यक्रम शुरू होने से पहले आचार्य जी के

साथ आयी गायक पार्टी 'तारणहार थलासिर आयो' स्वागत साखी गाकर सभी का स्वागत किया। सभा के कोषाध्यक्ष अनिल कुमार धारणिया ने सभी मेहमानों का सम्मान किया। सभा सचिव इंद्रजीत बिश्नोई द्वारा सभी का स्वागत किया गया व धर्मशाला के शिलान्यास से लेकर आज तक के इतिहास के बारे में विस्तार से बताया गया। हरियाणा के तत्कालीन मुख्यमंत्री 'बिश्नोई रत्न स्व. चौ. भजनलाल जी बिश्नोई' व पूर्व अध्यक्ष 'स्व. श्री बृजलाल खीचड़' के द्वारा तन-मन-धन से किए गए सहयोग की भूरि-भूरि प्रशंसा की। एडवोकेट कृष्ण कुमार सीगड़ ने बच्चों को नशे से दूर रह कर अच्छी पढ़ाई के बारे में वक्तव्य किया। इसी बीच गुरु जम्भेश्वर सेवक दल, मुकाम के संगठन मंत्री श्री सुरजभान गोदारा ने सेवक दल को संगठित रहने का आह्वान किया। मुख्य अतिथि ने सभा का आभार बताया व सबदवाणी के सबद 120 की व्याख्या करते हुए बताया कि हमेशा विष्णु भगवान का जाप करना चाहिए। शिक्षा, खेलकूद, पर्यावरण संरक्षण, समाज सेवा अग्रणी स्थान पाने वालों का सभा के अध्यक्ष मुख्य अतिथि आचार्य जी द्वारा स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। श्री हंसराज प्रिंसीपल ने मंच संचालन बखूबी किया व सभा द्वारा सात दिन तक किए सेवा कार्य करने वालों का धन्यवाद किया। इस मौके पर श्री बनवारी लाल गोदारा, श्री मिठु राम थापन पूर्व संरपच, श्री रणवीर सहारण, श्री विनोद कुमार कानुनगो, श्री सतपाल जी खीचड़, श्री राजेन्द्र कुमार कडवासरा, श्री कृष्ण कुमार खीचड़, रिटा. जिलेदार, श्री अमीलाल पटवारी, श्री रामेश्वर सीगड़, इंस्पैक्टर रोडवेज; श्री कृष्णलाल लोहमरोड़, श्री सुभाष पटवारी, श्री जगदीश सीगड़ रोहज, देवीलाल पटवारी, कृष्ण गोदारा, पटवारी; डॉ. महेन्द्र भादू, रविन्द्र खीचड़, विनोद धायल, सुरिन्द्र धारणीया, वीरेन्द्र भादू, महेन्द्र भादू, रामेश्वर गोदारा, दलीप कडवासरा, अमरसिंह गोदारा, जीत राम पुनिया, शिव कुमार खीचड़, जगदीश कानुनगो, सोमराज पुजारी, सुरेन्द्र यादव उपस्थित रहे। सभा की ओर से मेले में आये सभी माता, बहनों, भाइयों का धन्यवाद किया।

-इन्द्रजीत बिश्नोई, सचिव
धर्मशाला, मण्डी डबवाली
मो. 9416363802

अ.भा. गुरु जम्भेश्वर कल्याण समिति ने खेजड़ली शहीदों की स्मृति में किया पौधारोपण

खेजड़ली: अखिल भारतीय गुरु जम्भेश्वर कल्याण समिति द्वारा खेजड़ली, जिला जोधपुर (राज.) में खेजड़ली शहीदों की याद में 18 अगस्त को पौधारोपण किया गया। समिति द्वारा विभिन्न किस्मों के 700 पौधे गांव कालीरावण, जिला हिसार की नर्सरी से लेकर गांव खेजड़ली, जिला जोधपुर में पंहुचाया गया। अखिल भारतीय गुरु जम्भेश्वर कल्याण समिति के तत्वाधान में आयोजित पौधारोपण कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों से आये कर्मचारियों, सेवानिवृत कर्मचारियों एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। इस अवसर पर श्री सुखराम बिश्नोई, पर्यावरण एव वन मंत्री राजस्थान सरकार ने पौधारोपण किया और कहा कि पेड़ों की रक्षा के लिए जो बिश्नोई समाज की पहचान है, उसे समाज आज भी बनाए हुए है। मंत्री जी ने अपने संदेश में बताया कि पर्यावरण प्रदूषण को कम करने लिए हमें और अधिक पौधे लगाने होंगे। उन्होंने कहा कि 'अखिल भारतीय गुरु जम्भेश्वर

कल्याण समिति' ने खेजड़ली के शहीदों की याद में यहां पौधारोपण करके सराहनीय काम किया है। उन्होंने समिति द्वारा जगह-2 पर पौधारोपण व उनके बेहतरीन रख-रखाव के लिए समिति के सदस्यों का धन्यवाद किया व समिति से उम्मीद जताई कि वह भविष्य में भी इसी प्रकार अपने अभियान को आगे बढ़ाते हुए प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखने में लोगों के बीच जागरूकता फैलाते रहेंगे।

लूणी के विधायक श्री महेन्द्र बिश्नोई ने कहा कि अखिल भारतीय गुरु जम्भेश्वर कल्याण समिति ने खेजड़ली शहीदों की याद में पौधारोपण अभियान चलाकर शहीदों की याद ताजा कर दी है। हमें समाज के उन वीरों की शहादत से प्रेरणा लेनी चाहिए और समाज सेवा के लिए तत्पर रहना चाहिए।

अ.भा. गुरु जम्भेश्वर कल्याण समिति के प्रधान श्री निहाल सिंह गोदारा, क्षेत्रिय विपणन प्रवर्तन अधिकारी, हरियाणा राज्य कृषि विपणन मण्डल ने इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने व लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूकता के लिए श्री सुखराम बिश्नोई, पर्यावरण एव वन मंत्री राजस्थान सरकार, लूणी के विधायक श्री महेन्द्र बिश्नोई व राजेश्वरी देवी एवं सभी पर्यावरण प्रेमियों का तह दिल से धन्यवाद किया।

पौधारोपण कार्यक्रम में समाजसेवी कृष्णलाल काकड़, बंसीलाल राहड़, सुभाष गोदारा उपप्रधान, जगदीश कड़वासरा, श्री चोथाराम ज्याणी उपप्रधान, श्री रामेश्वर लांबा पूर्व उप पुलिस अधिक्षक, ओमप्रकाश भादू सदलपुर, रामकुमार काकड़, कृष्णलाल बैनीवाल सरपंच, दलीप जांगड़ा, पालाराम करीर, रामेश्वर राहड़, सेवानिवृत अधिक्षक अभियंता रामेश्वर राहड़, सुभाष एस.आई. चिकनवास, संदीप गोदारा, हनुमान पूनियां वीएलडीए, महेन्द्र डेलू शेखुपुर, आत्माराम डेलू, फुसाराम धतरवाल, तेलूराम सहारण, वीरसिंह राहड़, शिवकुमार देहडू, ओम विष्णु बैनीवाल, गणपतराम ढुकियां, राजेन्द्र सिगड़, बिमला, धूप कालीराणा, अनूप खादाब आदमपुर, अंकित लाम्बा, रमेश गोदारा जेडएमईओ, रवि मांजू, ईश्वर पटवारी मोठसरा, रामबीर धतरवाल तलवंडी बादशाहपुर, छबीलदास धायल सीसवाल, कुलदीप गोदारा रावतखेड़ा, कृष्ण जांगड़ा मलापुर, निहाल सिंह मांजू गोरखपुर, अमीलाल पूनियां भोडिया, राजेन्द्र महला, आत्माराम जाजूदा, ओमप्रकाश सिगड़, रामसिंह ज्याणी आदमपुर, राजाराम सहारण आदमपुर, मोहर सिंह नम्बरदार मोठसरा, कालीरावण से हनुमान सहारण, कृष्ण सहारण, निहाल सिंह गोदारा भाणा एवं श्री श्रीचन्द पूनियां मल्लापुर सहित समाज के अनेक गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

-निहाल सिंह गोदारा
प्रधान, अ.भा.गु.जं. कर्मचारी कल्याण समिति
मो.: 9416089688

गुरु जम्भेश्वर शोध संस्थान भवन, दिल्ली में खेजड़ी बलिदान दिवस मनाया

दिल्ली: अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा, दिल्ली प्रदेश, के तत्वावधान में गुरु जम्भेश्वर शोध संस्थान भवन, सिविल लाइन, दिल्ली में 8, सितम्बर को श्री रामसिंह जी पँवार के मुख्य अतिथ्य में और श्री राम जी पोकर विशिष्ट अतिथि के अतिथ्व में तथा वरिष्ट कवि एवं साहित्यकार प्रधान श्री ओ.पी. बिश्नोई 'सुधाकर' की अध्यक्षता में और कार्यकारी अध्यक्ष श्रीमती सन्ध्या बिश्नोई की देख-रेख में 'खेजड़ी बलिदान शहीद दिवस' विधिवत सम्पन्न हुआ। श्री राम सिंह जी सीघड़ (ई.एस.आई.), छज्जूराम जी एवं श्री सुराराम जी ने भी मंच की शोभा बढ़ाई।

सर्वप्रथम प्रात: 10 बजे हवन किया गया, सभी श्रद्धालु भक्तों ने पाहल व प्रसाद ग्रहण किया। वीरांगना अमृता देवी व गुरु जाम्भोजी के चित्रों पर पुष्पमालाएँ अर्पित की गई फिर दीप जलाकर कार्यक्रम आरम्भ किया गया।

इसके पश्चात् वृक्षमित्र शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये दो मिनट का मौन रखा गया तथा पुष्प अर्पित किए। इसके पश्चात् संस्थान भवन के आँगन में वृक्ष भी

रोपे गये। इस अवसर पर खेजड़ी बलिदान पर एक लघु नाटिका भी बच्चों द्वारा प्रस्तुत की गई। बच्चों को श्रीमती संध्या जी की तरफ से पुरस्कार द्वारा भी सम्मानित किया गया। सर्वश्री महेश गोदारा, अजय बिश्नोई, अजीत बिश्नोई, अखिलेश बिश्नोई, सुनील बिश्नोई तथा समाज के गणमान्य लोग मौजूद थे।

-ओ.पी. बिश्नोई 'सुधाकर'
प्रधान, अ.भा. जीव रक्षा बिश्नोई सभा, दिल्ली

बिश्नोई समाज के प्रमुख धाम

पीपासर

सम्भराथल

जम्भोलाव

जांगलू

रोटू मन्दिर

लोदीपुर

मुकाम

लालासर साथरी

वील्हेश्वर धाम रामड़ावास

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

सम्वत् 2076 आश्विन की अमावस्या

लगेगी: 28.09.2019 शनिवार प्रात: 3:45 बजे

उतरेगी: 28.09.2019 शनिवार रात्रि 11:55 बजे

सम्वत् 2076 कार्तिक की अमावस्या

लगेगी: 27.10.2019 रविवार दिन में 12:22 बजे

उतरेगी: 28.10.2019 सोमवार प्रात: 09:08 बजे

शरद पूर्णिमा (खीर): जाजीवाल धोरा (रविवार 13.10.2019)

धर्म स्थापना दिवस मेला : सम्भराथल धोरा, दिल्ली, अबोहर, माणकी, फतेहाबाद (सोमवार 21.10.2019)

दीपावली : (रविवार 27.10.2019)

रामा श्यामा: (सोमवार 28.10.2019)

उनतीस धर्म नियम

- तीस दिन सूतक रखना।
- पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक् रहना।
- प्रतिदिन सवेरे स्नान करना।
- शील का पालन करना व संतोष रखना।
- बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
- द्विकाल संध्या-उपासना करना।
- संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
- निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
- पानी, ईंधन और दूध को छान कर प्रयोग में लेना।
- वाणी विचार कर बोलना।
- क्षमा-दया धारण करना।
- चोरी नहीं करनी।
- निन्दा नहीं करनी।
- झूठ नहीं बोलना।
- वाद-विवाद का त्याग करना।
- अमावस्या का व्रत रखना।
- विष्णु का भजन करना।
- जीव दया पालणी।
- हरा वृक्ष नहीं काटना।
- काम, क्रोध आदि अजरों को वश में करना।
- रसोई अपने हाथ से बनानी।
- थाट अमर रखना।
- बैल बधिया नहीं कराना।
- अमल नहीं खाना।
- तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
- भांग नहीं पीना।
- मद्यपान नहीं करना।
- मांस नहीं खाना।
- नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

RNI No. : 12406/57
POSTAL REGD. NO. : L/Regd. NP/HSR/01/2017-2019
L/WPP/HSR/03/17-19

POSTAGE PREPAID IN CASH
POSTED AT : HISAR H.O.
POSTING DATE : 1st OF EVERY MONTH

गुरु जम्भेश्वर जी महाराज की तपोस्थली सम्भराथल धोरा

मुद्रक, प्रकाशक प्रदीप बैनीवाल, प्रधान, बिश्नोई सभा, हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 अक्तूबर, 2019 को मुख्य डाकघर, हिसार से प्रेषित किया।

DOREX Printers 9896011117